॥ श्री सरस्वत्यै नमः ॥

असली पं० रामस्वरूप शर्मा मेरठ निवासी की

श्राद्ध पद्धति भा० टी०

(नान्दीमुख, एकोद्दिष्ट, पार्वण श्राद्ध विधि व पंचकों में मृतकदाहकर्म सहित)

●

पं० वेणीराम शर्मा, दौलतराम गौड़, धरणीधर शास्त्री, रामलगन पांडेय, सीताराम झा, वायुनन्दन मिश्र, प० चतुर्थीलाल तथा ज्वालाप्रसाद मिश्र आदि की समस्त पुस्तकें मिलने का एकमात्र स्थान—

देहाती पुस्तक भण्डार (Regd.)

93 चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006

फोन : 3261030, 3279417

शोरूम व ब्रांच : जी-1, शक्ति दीप, 2, नेताजी सुभाष मार्ग, दरियागंज, नई दिल्ली-2

फोन : 3266864

पं० रामस्वरूप मेरठ वाले

* श्री गणेशाय नमः *

PRICE
Rs 20 /-
Dehati Pustak Bhandar

श्राद्ध पद्धति

१ नान्दीमुख, २एकोद्दिष्ट, ३पार्वण श्राद्ध विधि

भाषा टीका सहित

अथ नान्दीमुख श्राद्ध विधि :—

दोहा—श्री गुरु चरण सरोज रज, धरके मन में ध्यान।
नान्दीमुख भाषा लिखूं, पढ़ो शुद्धि पहचान॥

(प्रथमंद्वेवेद्यौविरच्य देवतास्तत्र संस्थाप्य) पहले दो वेदी बनाकर उनके ऊपर देवता ग्रहादि स्थापन कर। (तत्रतन्नियत-पूर्वकृत्यो मातृ पूजा विधिः) वहां नियम से शुद्धि आदि करके मातृ पूजन करने में तत्पर हो, (प्रातःकाले स्नातः कृत नित्यक्रियः कुरुये फलकेवा) प्रातः काल स्नान कर और पूजन सन्ध्यादि क्रिया करके दीवार पर वा किसी पटड़े पर (स्थापित रक्षिका सप्तदशतमे) १७ राखी से वा किसी डोरे से उन षोडश मातृकाओं की स्थापना करे। गणपतिसहित षोडश मातृः मृत्तिकामयीं श्रियं तदभावे तामपि रक्षिकायां पूजयेत्) गणेश सहित षोडश मातृकाओं का पूजन करे और मिट्टी की लक्ष्मी का वा उसके न होने पर लक्ष्मी का भी षोडश मातृकाओं की जगह

पूजन करे। (तत्र मातरश्च) वहां पर षोडश मातृकाओं का पूजन करे और उनके नाम नीचे लिखे श्लोक के अनुसार बोले।

गौरीपद्मा शची मेधा सावित्री विजयाजया।
देवसेना स्वधा स्वाहा मातरो लोकमातरः
हृष्टिः पुष्टिस्तथा तुष्टिरात्मनः कुल देवता

(ततः क्रमः) फिर क्रम से पूजन करे। (आचम्य प्राङ्मुखः उपविश्य) आचमन कर पूर्व को मुख करके बैठे। (प्रथम रक्षिकामारभ्य) पहली राखी को आदि ले पूजन क्रम से करे और नीचे लिखे नामों को बोले। **गणपतिरसि, गौर्य्यसि, पद्मासि, शच्यसि, मेधासि, सावित्र्यसि, विजयासि, देवसेनासि, श्रीरसि,** (इति संगद्य) ऐसे नाम लेकर (ततो ऽक्षतानादाय) फिर चावल हाथ में लेकर। (पुनः प्रथमरक्षिकामारभ्य) फिर पहली रक्षिका से लेकर सबों पर नीचे लिखे मन्त्रों को बोलते हुवे चावल छोड़ दे।

ओ३म् भूर्भुवः स्वर्गणपते इहागच्छ इहतिष्ठ ओ३म् भूर्भुवः स्वर्गौरि इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः पद्मे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः शचि इहागच्छ इहतिष्ठ। ओ३म् भूर्भुवः

स्वः मेधे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः सावित्री इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वर्विजये इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वर्जये इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वर्देवसेने इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वर्मातर इहागच्छत इहतिष्ठत ओ३म् भूर्भुवः स्वर्लोकमातर इहागच्छत इहतिष्ठत ओ३म् भूर्भुवः स्वः हृष्टे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः पुष्टे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वस्तुष्टे इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः आत्मकुलदेवते इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ ओ३म् भूर्भुवः स्वः श्री इहागच्छ इहतिष्ठ ॥ एवं गणपतिसहिता एता मातृः श्रियश्च प्रत्येकमोङ्कार व्याहृति पूर्वकमावाह्य स्थापयित्वा इस प्रकार गणपति सहित इन षोडश मातृकाओं का और लक्ष्मी का एक-एक करके व्याहृतिपूर्वक आह्वान कर स्थापन करके नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर उन पर

चावल छोड़ दे। **ओ३म् मनोजूतिर्जुषतामाज्यस्य बृहस्पतिर्य्यज्ञमिमंतनो त्वरिष्टं यज्ञꣳ समिमंदधातु ॥ विश्वेदेवा स इह मादयन्तामोंप्रतिष्ठ।** (एकदैव प्रतिष्ठां कुर्यात्) एक बार प्रतिष्ठा पूजन करे। (ततः पाद्यादि गृहीत्वा प्रथमतआरभ्य) फिर पाद्य आदि हाथ में लेकर क्रम से (एतानि पाद्यार्घाचमनीय स्नानीय पुनराचमनीयानि) ये पाद्य, अर्घ, आचमन, स्नान फिर आचमनादि (गणपतये नमः) वस्तु गणेश के लिये है, नमस्कार है। (इदंमनुलेपनम् गणपतये नमः) यह चन्दन मस्तक पर लेप करने के लिये है। गणेशजी को नमस्कार है। (इमानिपुष्पाणि ओ३म् गणपतये नमः इति त्रिः पूजयेत्) इस प्रकार तीन बार पूजन करे। **एतानि गन्धपुष्पधूपदीपताम्बूलनैवेद्यानि गणपतये नमः** (एवमेव) इसी प्रकार गन्धाक्षत आदि से गौर्य्यादि का पूजन करे नीचे लिखे मन्त्र को बोलता हुआ। **ओ३म् गौर्य्यै नमः ओ३म् पद्मायै नमः। ओ३म् शच्यै नमः। ओ३म् मेधायै नमः। ओ३म् सावित्र्यै नमः। ओ३म् विजयायै नमः। ओ३म् जयायै नमः। ओ३म् देवसेनायै**

नमः । ओ३म् स्वधायै नमः । ॐ स्वाहायै नमः । ओ३म् मातृभ्यो नमः । ओ३म् लोकमातृभ्यो नमः । ओ३म् हृष्टयै नमः । ओ३म् पुष्ट्यै नमः । ओ३म् तुष्ट्यै नमः । ओ३म् आत्मनः कुलदेवतायै नमः । ओ३म् श्रियै नमः इति पाद्यादिभिः प्रत्येकमर्चयेत् ॥

इस प्रकार से पाद्य अर्घादि से एक-एक करके पूजन करे। (ततो गणपति श्रीसहिताः षोडशमातरः क्षमध्वमिति-विसर्जनम्) फिर गणपति लक्ष्मी सहित षोडश मातृकाओं का पूजन कर क्षमा की प्रार्थना कर विसर्जन करे। (श्रीर्मयिरमस्वेति) श्री लक्ष्मी देवी मेरे में वास करे। (ततोघृतेनभितौ पञ्चसप्त-वारेखा उत्तरोत्तरक्रमेण कुर्यात्) फिर घी से दीवार पर पांच या सात रेखा उत्तर से उत्तर की ओर को क्रम से निकाले। (ताश्चपलेनप्रतिछेदनेन मंत्रेण) वे रेखा अखण्ड घृत की धारा पली से जो टूटे नहीं, नीचे लिखे मन्त्र से देवे। ओ३म् वसोः पवित्रमसि शतधारं वसोः पवित्रमसि सहस्रधारं देवस्त्वा सविता पुनातु वसोः पवित्रेण शतधारेण सुप्वाः कामधुक्षः (अथाभ्युदयिक श्राद्धप्रयोगः) अब नान्दीमुख श्राद्ध विधि लिखते हैं—(पवित्रीधारणम्) कुशा की पवित्री पहरे। (तत्र

दक्षिणोत्तरक्रमेणद्वादशस्थानेषु प्रत्येक मासादितव्यम्) दक्षिण दिशा से उत्तर क्रम द्वादश स्थानों में एक-एक कुशा का आसन रक्खे । (ज्वलितदीप देशमागत्या चम्य प्राङ् मुख उदङ् मुखोवोपविशेत्) जलते हुवे दीपक के पास मे आकर आचमन कर पूर्वमुख वा उत्तरमुख हो बैठे । (सव्येन सर्वंकर्म कर्तव्यम्) सव्य होकर सर्व कर्म करे । (ऋजव एव कुशाः तिलकार्येयवाः कर्तव्याः) सीधी कुशा और तिल के काम में जौ लेने चाहियें (ततः ओ३म् अपवित्रः पवित्रो वासर्वा-वस्थांगतोपि वा यःस्मरेत्पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ओ३म् पुण्डरीकाक्षः पुनात्विति श्राद्धीपद्रव्याणि सिञ्चेत् कुशोदकेन्) इस ऊपर के मन्त्र को पढ़ कुशा से जल का छींटा श्राद्ध की वस्तुओं पर छोड़ दे । (ततः कुशयवज-लान्यादाय) फिर कुशा, जौ, जल लेकर प्रतिज्ञा संकल्प करे—

ओ३म् अद्यामुकगोत्राणां मातृपितामही प्रपितामही नाममुकामुकदेवीनां नान्दी-मुखीनां तथाऽमुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां अमुकामुक शर्मणां नान्दी-मुखानाम् तथा द्वितीय गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्धप्रमातामहानां अमुकामुक शर्मणां नान्दीमुखानाममुकगोत्रस्य कर्तव्या-

मुक कर्मनिमित्त माभ्युदयिक श्राद्धमहं करिष्ये (ततोगायत्रींत्रिर्जपेत्)। फिर तीन बार पितृ गायत्री का जाप करे। ओ३म् देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः (ततः) फिर आसन लेकर संकल्प करे—ओ३म् अद्यामुक गोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामहीनाममुकामुक देवीनां नान्दीमुखी नामाभ्युदयिकश्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा इदमासनं वो नमः (इतिकुशत्रयरूपं सपवित्रं सयवमासनं दक्षिणत आरभ्योत्सृजेत्) इस प्रकार संकल्प कर तीन कुशा पवित्री के सहित और जौ के सहित आसन दक्षिण दिशा से लेकर क्रम से धर देवे। (एवंपचोत्तरम्) इसी प्रकार उत्तर को धरे संकल्प पढ़ता हुआ। अद्यामुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाममुकामुक शर्मणां नान्दी मुखानामाभ्युदयिकश्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा इदमासनंवो नमः। अद्यामुक गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाममुकामुक शर्मणां सपत्नीकानां-माभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वे देवा

इदमासनंवो नमः ॥ इस प्रकार तीन आसन तीनों विश्वे देवाओं के धर कर फिर मातृ आदिकों के आसन संकल्प पढ़ता हुआ धरे। संकल्प लिखते हैं—**अद्यामुकगोत्रे अस्मिन् मातरमुकदेवी नान्दीमुखी आभ्युदयिक श्राद्धे इदमासनंते नमः ॥** (एवं पितामही प्रपितामही-भ्यामासनं दद्यात्) इसी प्रकार जैसे माता का संकल्प लिखा है तैसे ही पितामही (दादी), प्रपितामही (परदादी) को आसन संकल्प पढ़कर देवे फिर पिता आदि को आसन देने का संकल्प पढ़े, संकल्प—**अद्यामुकगोत्र पितरमुक शर्मन् नान्दीमुखा-भ्युदयिक श्राद्ध इदमासनंते नमः।** (एवं पितामह प्रपितामहयोरपि) इसी प्रकार पितामह (दादा), प्रपितामह (परदादा) को आसन संकल्प पढ़कर देवे और फिर नानादिकों को आसन देवे, इस संकल्प से—**अद्यामुकगोत्र मातामह अमुकशर्मन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्ध इदमानंते स नमः।** (एवं प्रमातामह वृद्ध प्रमाता-महयोरपि) इस प्रकार प्रमातामह (परनाना), वृद्ध प्रमातामह (चड़नाना) आदि का नाम उच्चारण कर आसन देवे। (तत आह्वानम्) फिर आह्वान विश्वे देवाओं का नीचे के मन्त्र से करे विश्वेदेवानमाह्वाहयिष्ये इत्युक्ता) विश्वे देवाओं को आह्वान करूंगा इस प्रकार कह कर। **ॐ विश्वेदेवासऽआगत**

शृणुताम इमꣳ हवम् ॥ इदंवर्हिर्निषीदत ॥

इत्यावाह्य । ऊपर के मन्त्र से आह्वान कर नीचे लिखे मन्त्र से विश्वेदेवा के पात्र पर जौ छोड़ दे। **ॐ यवोसि यवयास्मद्वेषो यवयाऽरातीरिति देवपात्रे यवान् विकीर्य** ॥ ऊपरोक्त मन्त्र से विश्वेदेवा के पात्र पर जौ छोड़ कर नीचे लिखे मन्त्रों को प्रार्थना पूर्वक पढ़े—

ॐ विश्वेदेवाः शृणुतेमꣳ हवंमे ये अन्तरिक्षे यऽउपद्यविष्ठ । ये ऽअग्नि जिह्वा उतवायजत्राऽआसद्यास्मिन् बर्हिषि मादयध्वम् ॥

ॐ आगच्छन्तुमहाभागा विश्वेदेवामहाबलाः येऽत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तुते ॥

(ओ३म् नान्दीमुखान् पितृनहमावाहयिष्ये) नान्दीमुख पितरों को बुलाऊंगा ऐसा कह निम्न मन्त्र बोले। **ॐ उशन्तस्त्वानिधीमह्युशन्तः समिधीमहि ॥ उशन्नुशतऽआवहपितॄन् हविषे अन्तवे ॥**

(इति पितृनावाह्य) पितरों का आह्वान करे। **ॐ अपहता ऽसुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः । (इति मात्रादिपात्रे यवान् विकीर्य)** उपरोक्त मन्त्र से माता आदि पितादि माता महादि के पात्रों पर जौ छोड़ कर

नीचे लिखे मन्त्रों से प्रार्थना करे— ॐ आयन्तु नः पितरः सोम्यासो ऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देव यानैः । अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोधिब्रुवन्तुतेऽवन्तु अस्मान् । (ततो अर्घ करणम्) फिर अर्घ करे अर्थात् जल पात्रों में छोड़ दे । (तत्र देवपूर्वकं सर्वेषु अर्घपात्रेषु पवित्राणि धृत्वा) वहां पर विश्वेदेवा के पात्रों में पहले पवित्री धर कर फिर सबके अर्घ पात्रों में पवित्री धर कर नीचे लिखे मन्त्र से उन पात्रों में जल छोड़ दे । ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंय्योरभिस्रवन्तुनः ॥ (ततो देवार्घपात्रेषु यवान् क्षिपेत्) फिर देवताओं के अर्घ पात्रों में नीचे लिखे मन्त्र से जौ छोड़ दे । ॐ यवोसि यवयास्मद्द्वेषो यवयारातीरिति ॥ (ततो मात्रादि पात्रेषु यवान् क्षिपेत्) फिर मातादि पितादि माता महादिकों के पात्रों में नीचे लिखे मन्त्र से जौ छोड़ दे । पात्र से यहां पर ढाक के पत्तों के दौने समझना चाहिये उनके आसनों के आगे एक-एक दौना धर दे जिसमें जल छोड़ा है । ॐ यवोसि सोमदेव त्योगोसवे देव निर्मितः । प्रयत्नमद्भिः प्रपुष्टया नान्दीमुखांल्लोकान् प्रीणाहिनः स्वाहा ॥ (ततः प्रत्येकं गन्ध पुष्पे तूष्णीं क्षिपेत्) फिर उन दोनों में चन्दन

फूल चुपके से छोड़ दे। **(ततः प्रथमं देवपात्रं वामहस्ते कृत्वा)** फिर प्रथम देव पात्र को बायें हाथ में धरकर। **(तत्रस्थं पवित्रं भोजनपात्रे निधाय)** उस पात्र पर धरी हुई पवित्री को भोजन पात्र पर धरकर **(तदुपरिकिंचिदुदकान्तरंदत्वा)** फिर उस पर कुछ जल छोड़कर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर संकल्प करके अर्घ पात्र मातादि के विश्वे देवा को देवे वा तीनों का एक संकल्प कराकर एक अर्घ पात्र वा तीन अर्घ पात्र तीनों विश्वे देवाओं को देवे। संकल्प लिखते हैं, परन्तु पहले मन्त्र बोलते हैं। **ॐ यादिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षाऽऽउतपार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्तान ऽआपः शिवाः शꣳ स्योनाः सुहवा भवन्तु॥** इस मन्त्र को पढ़कर तीन कुशा जौ, जल आदि और वही अर्घ पात्र हाथ में लेकर संकल्प पढ़े। **अद्यामुक गोत्राणां मातृपितामही प्रपितामहीनाममुकामुक देवीनां नान्दीमुखी नामाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एष हस्तार्घोवो नमः॥** यह तो मातादि के विश्वे देवा का अर्घ पात्र हुआ, फिर दूसरा पहले प्रकार से बायें हाथ में लेकर उसकी पवित्री भोजन के पात्र पर धरके फिर कुछ जल भोजन पात्र पर छोड़कर (यादिव्या) इस मन्त्र को पढ़कर पितादि के विश्वे देवाओं का अर्घ पात्र में छोड़ दे, संकल्प पढ़ता हुआ। **अद्यामुकगो-**

त्राणां पितृपितामह प्रपितामहानाममुकामुक शर्मणां नान्दीमुखानामाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषहस्तार्घोवो नमः ॥

(एवमेव मातामहादि देवेभ्यश्च हस्तार्घं दद्यात्)

इस प्रकार मातामहादि के विश्वेदेवाओं को हस्तार्घ संकल्प कर देवे।

ततो मातुर्घपात्र मादाय पूर्ववत् कृत्वा) फिर माता के अर्घ पात्र को लेकर बायें हाथ में धरकर उसमें की पवित्री भोजन पात्र पर धरके, उस भोजन पात्र पर उसमें से कुछ जल छोड़कर (यादिव्या) इस मन्त्र को पढ़कर कुशा, यव, जल लेकर संकल्प पढ़ता हुआ अर्घ देवे। **अद्यामुकगोत्रे मातरमुक देवी नान्दीमुखी आभ्युदयिक श्राद्ध एषतेहस्तार्घो नमः ।** (एवं पितामहो प्रपितामह्योरपि दद्यात्)

इस प्रकार पितामही प्रपितामहीओं को उच्चारण कर हस्तार्घ देवे।

(ततः पित्राद्यर्घ पात्रमादाय) फिर पितादि का अर्घ पात्र बायें हाथ में लेकर और सब विधि पहले की हुई करके कुशा, जौ, जल, हाथ में लेकर संकल्प पढ़ कर देवे। संकल्पः—

अद्यामुकगोत्रपितरमुक शर्मन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे एषते हस्तार्घो नमः।

(एवमेव पितामहादि पञ्चभ्यो हस्तार्घं दद्यात्)

इस प्रकार से जैसे अब तक विधि बतलाई और संकल्प बोला उसी प्रकार पितामह, (दादा), प्रपितामह (परदादा), मातामह (नाना),

प्रमातामह (परनाना), वृद्ध प्रमातामह (चड़नाना) आदि का नाम उच्चारण कर हस्तार्घ देवे। **(ततोऽवशिष्ट जलपवित्रयुतं प्रथमं देवार्घपात्र मादाय)** फिर बाकी जल पवित्री के साथ वाला विश्वे देवा का अर्घ पात्र लेकर पहले नीचे लिखे मन्त्र से विश्वे देवा के आसन के दक्षिण की ओर सीधा रखदे। मन्त्र :— **ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीति। एवम परदेवार्घपात्रद्वयम्।** इसी प्रकार दोनों विश्वे देवों के अर्घ पात्र को लेकर ऊपर लिखे मन्त्र को पढ़कर सीधा ही रखदे, उन-उन के आसन के दक्षिण भाग में। **(ततः पितामही प्रपितामही पात्रद्वयस्थितं पवित्रादिमात्रर्घं पात्रेनिधाय)** फिर पितामही (दादी), प्रपितामही (परदादी के दोनों पात्रों में रक्खे हुवे पवित्री आदि को माता के अर्घ पात्र में रख कर— **(मात्रर्घपात्रं पितामह्यर्घ पात्रोपरि)** माता के अर्घ पात्र को पितामही (दादी) के अर्घ पात्र पर धर कर—**(तत्पात्रं प्रपितामह्यर्घ पात्रोपरिधृत्वा)** दादी के अर्घ पात्र को प्रपितामही (परदादी) के अर्घ पात्र पर धर कर— **(दक्षिणकरेणादाय)** दाहिने हाथ में धर कर नीचे के मन्त्र को बोले। **मातृभ्य स्थानमसि। मात्रासन वामभागे न्युब्जी कुर्यात॥** इस मन्त्र को बोलकर माता के आसन के बाईं ओर उसको उल्टा करदे। **(एवमेवपित्राद्यर्घ पात्राणां मेलनं कृत्वा)** इसी प्रकन्र पिता आदि के पात्रों का मेल कर अर्थात्

पितामह, प्रपितामह के पात्रों की पवित्री पिता के पात्र पर धरकर फिर पिता के अर्घ पात्र को पितामह के अर्घ पात्र पर धरकर फिर पितामह के अर्घ पात्र को प्रपितामह के अर्घ पात्र पर धर कर दाहिने हाथ में लेकर। **पितृभ्यः स्थानमसि। इति पित्रासन वामभागे अर्घपात्राणि न्युब्जी कुर्यात॥** ऊपर की श्रुति बोलकर (इति) के अर्थ हैं ऐसा कह कर पिता के आसन के बाईं ओर अर्घ पात्रों को उल्टा कर देवे। **(एवमेव मातामहाद्यर्घ पात्राणां मेलनं कृत्वा)** इसी प्रकार जैसे दो बार लिख चुके, माता महादिकों के अर्घ पात्रों को मिलाकर नीचे लिखे वाक्य को बोले। **ॐ मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहमहेभ्यः स्थानमसि॥** इस मन्त्र को बोलकर—**माता महासन वामभागे न्युब्जी कुर्यात॥** मातामह (नाना) के आसन के बाईं ओर उल्टा कर देवे। **(ततो गन्धादिदानम्)** फिर गन्ध, चन्दन आदि फूल, धूप, दीप, पान, यज्ञोपवीत (जनेऊ), वस्त्र, अंगोछे आदि पहले तीनों विश्वे देवाओं को देवे फिर माता आदि पिता आदि माता महादि तीन-तीन को ऊपर लिखी वस्तु संकल्प द्वारा चढ़ावे, नीचे लिखे संकल्प से। संकल्प—**ॐ अद्यामुक गोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामहीनामुक देवीनां नान्दीमुखीनामाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि गन्धपुष्पधूप**

दीप ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसिवो नमः ॥

(एवमेव पित्रादिदेवेभ्यो मातामहादि देवेभ्यश्च दद्यात्)

इसी प्रकार पिता आदि का नाम संकल्प में उच्चारण कर और मातामहादि का भी नाम बोल कर उन-उन के विश्वे देवाओं को इस प्रकार बोल कर जैसे संकल्प में कहा है, वस्तुओं का नाम ले, उनको चढ़ावे। फिर माता को ऊपर लिखी हुई चन्दन आदि सब वस्तु सँकल्प द्वारा देवे अर्थात् उनके आसनों पर चढ़ावे।

ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुकदेवी नान्दीमुखी आभ्युदयिक श्राद्धे एतानि गन्धपुष्प धूप दीप ताम्बूल सिन्दूर वासांसिते नमः ॥

यह संकल्प बोल कर माता के आसन पर सब वस्तु चढ़ा दे।

(एवमेव पितामही प्रपितामह्योरपि गन्धादि दानम्)

इसी प्रकार पितामही, प्रपितामही के आसनों पर गन्धादि सब वस्तु ऊपर लिखे संकल्प में पितामही और प्रपितामही आदि का नाम बोल के चढ़ावे। **ततः ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुक शर्मन् नान्दीमुख आभ्युदायक श्राद्धे एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल यज्ञोपवीत वासांसिते नमः ॥** इसी प्रकार का संकल्प पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध मातामह आदि का नाम और गोत्र उच्चारण कर गन्ध, फूल आदि वस्तु अंगोछे सहित चढ़ावे।

(ततो जलेन सर्वासनानि भोजन पात्रसहितानि

चतुष्कोण मण्डलेन वेष्टयेत्) फिर चारों ओर को घुमाते हुये जल से सब आसन भोजन पात्रों के साथ ढक दे अर्थात् उनके ऊपर चारों तरफ जल फेर दे। **(ततः सजलेपुटकादौ हस्तेनैव सघृतमन्नम्)** फिर किसी दौने में पानी कर और घी का मिला हुआ कुछ अन्न उसकी आहुति हाथ से ही नीचे लिखे मन्त्रों को बोल, दो आहुति उस दौने में देवे। **(तत्र आहुति मन्त्रौ)** आहुति मन्त्र— **ॐ कव्यवाहनाय स्वाहा ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा॥** इससे दो आहुति देकर **(ततोऽपसव्यम्)** फिर अपसव्य होकर **(दक्षिण मुखः)** दक्षिण दिशा को मुख करके **(पातित वामजनुः)** बायां गोड़ा निवाके **(मोटक तिल जलान्यादाय)** मोटक कुशा का तिल, जल हाथ में लेकर कुछ अन्न को नीचे लिखे मन्त्र बोल कर धरती में धर दे। **ॐ इदमन्नमेतद् भूस्वामि पितृभ्यो नमः इति भूस्वामिने किञ्चिदन्नं दद्यात्॥** इस प्रकार से पृथ्वी के स्वामी को अन्न देवे। **(ततःसव्यंकृत्वा)** फिर सव्य हो **(प्राङ् मुखः उदङ् मुखोवा)**। पूर्व दिशा को मुख कर वा उत्तर को **(हुतशेषमन्नं)** बचे हुए अन्न को **(देवपूर्वक पात्रेषु किञ्चिदत्वा)** विश्वे देवाओं के पात्रों में कुछ अन्न देता हुआ फिर मातादि के पात्रों में देकर **(पिण्डार्थं किञ्चिदवशेषयेत्)** पिण्ड बनाने के लिये कुछ बचाले **(ततोऽन्यदन्नं यथासम्भवं परिविश्य)** फिर और अन्न जैसा उस

समय अपने से बन बन सका हो बनाकर और श्राद्ध जहां पर होता हो वहां लाकर (घृतंजलञ्च तत्रोपनीय पात्रमालभेत) घी और जल भी वहां लाकर और उसको छुवे (तत क्रम) वहां पर उसके देने का प्रकार दिखाते हैं (उत्तानपाणिभ्यां प्रथमं देवपात्रं स्पृष्ट्वा) सीधे दोनों हाथों से पहिले विश्वे देवा के पात्र को ढक कर नीचे लिखे मन्त्र को बोले। **ॐ पृथ्वीते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्यमुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा इति पठित्वा ॥** इस मन्त्र को पढ़कर दूसरा मंत्र पढ़े। **ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम्। समूढमस्यपाᳬ सुरेः ॥ कृष्णहव्यमिदं रक्षमदीयमिति पठित्वा ॥** इस मन्त्र को पड़कर **ॐ इदमन्नमित्यन्ने** यह अन्न है ऐसा कह कर अन्न पर अंगूठा लगावे। **ॐ इमाआप इति जले** इस वाक्य को कहकर जल में अंगूठा लगावे। **ॐ इदमाज्यमितिघृते** फिर इस मन्त्र को कहकर घृत पर अंगूठा लगावे। **ॐ इदंहविरिति पुनरन्ने इति दक्षिणांगुष्ठमारोप्य** फिर इस वाक्य को पढ़ कर अन्न पर दाहिना अंगूठा ही समझना, नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ कर जौ विश्वेदेवादि के पात्रों पर छोड़ दे। **यवोसि-यवयास्मद्वेषो यवयारातीरितियवान् विकीर्य।**

इस मन्त्र से जौ छोड़कर **कुशादिन्यादाय** कुशा जौ लेकर **ॐ अद्यामुक गोत्राणां मातृपितामही प्रपितामही नाममुकामुक देवीनां नान्दीमुखीनां माभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमन्नं सोपकरणंवो नमः ॥** इस संकल्प से पिण्ड के अन्न को मातादि के विश्वे देवा के आसनों पर चढ़ावे। **(यदैक-मेव पात्रं भवति)** यदि एक पात्र विश्वे देवाओं का हो **(तदा वामेन पाणिनापात्रमत्यजन्नेव)** तो बायें हाथ से पात्र को न छोड़ता हुआ ही **इदं विष्णुर्विचक्रमे । इत्यादि पठित्वा ।** इस मन्त्र को पढ़ कर, जो कि पहले लिख आये हैं और वही विधि हाथों की कर (पृथ्वीतेपात्रम्) को भी पहले पढ़कर। **यवोसी यवयेति च पठित्वा ॥** इस मन्त्र को पढ़ कर **(यवप्रक्षेपंकृत्वा)** जौ छोड़कर पात्रों पर **(कुशादीन्यादाय)** कुशा, जौ, जल लेकर—**ॐ अद्यामुक गोत्राणाममुकामुक शर्म्मणा पितृपितामह प्रपितामहानां नान्दीमुखानामाभ्युदयिक श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमन्नंवो नमः ॥** इस संकल्प को पढ़, पितादि के विश्वे देवाओं के निमित्त अन्न दे दे। **(एवमेव मातामहादि देवेभ्यः)** ऊपर लिखे क्रम से मातामह आदि के विश्वे

देवाओं के निमित्त उनका पितादि के समान गोत्र, नाम उच्चारण कर अन्न देवे। (भिन्न-भिन्न पात्र पक्षे) यदि अलग-अलग पात्र विश्वे देवाओं के हों तो तीनों पात्रों पर ॐ पृथिवीतेपात्र-मित्यादीनां सर्वेषामावृत्तिः ॥ इह मन्त्र को तथा (इदं विष्णु०) इस मन्त्र को बोले दोनों हाथों को सीधा ढांप कर। (ततो मातृपात्रमुत्तानाभ्यां कराभ्यां स्पृष्ट्वा) फिर माता के पात्र को उलटे हाथों से ढांप कर वा छू कर। पृथिवीते-पात्रमित्यादि॥ इस मन्त्र को पढ़ कर ॐ इदं विष्णु-रितिपठित्वा ॥ इस मन्त्र को भी पढ़ कर ॐ कृष्ण-कव्यमिद रक्षमदीयं॥ इस वाक्य को भी पढ़ कर इद-मन्नमित्यन्ने इत्यादि ॥ इन वाक्यों को भी पढ़ कर जो कि पहले विश्वे देवा के संकल्प के साथ लिखे हैं और दाहिना अंगूठा लगाकर— ॐ अपहता ऽअसुरा रक्षाण्सि-वेदिषदः। इत्यन्नोयन्नोपरि यवान् विकीर्य ॥ इस मन्त्र को उच्चारण कर और अन्न के ऊपर जौ छोड़ कर माता को अन्न देने का संकल्प बोले। ॐ अद्यामुकगोत्रे मातर-मुकदेवीनान्दीमुख्याभ्युदयिक श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणंते नमः ॥ इस संकल्प से माता को अन्न देवे। (एवं पात्रालम्भनादिकं कृत्वा) इसी ऊपर लिखे प्रकार से पितामही (दादी), प्रपितामही (पर दादी) आदि के पात्रों को ढक

कर मन्त्र बोल कर जौ छोड़कर। (प्रत्येकं पितामही प्रपितामहीभ्यामपि दद्यात्) एक-एक करके दादी, परदादी का गोत्र, नाम, माता के गोत्र, नाम के समान उच्चारण कर अन्न देवे। (एवं पितृपात्रमालभ्य) इसी प्रकार से पिता के पात्र को लेकर दोनों हाथों से ढक कर जैसे पहले किया है। ॐ पृथिवीते पात्रमित्यादि पठित्वा। इस मन्त्र को पढ़कर तथा इदं विष्णु०। इस मन्त्र को पढ़कर। (पूर्ववत् सर्वं कृत्वा) और सब विधि पहले की समान करके, पिता को अन्न देने के लिये नीचे लिखे संकल्प को बोले। ॐ अद्यामुक गोत्रपितरमुक शर्मन्नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे इदमन्नं सोपकरणंते नमः॥ (इति पित्रेऽन्नमुत्सृजेत्) इससे पिता को अन्न देवे। (एवं पितामहादि पञ्चभ्योपि प्रत्येकमन्नमुत्सृजेत्) इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह, रांचों के लिये एक-एक को पृथक्-पृथक् कर पूर्व लिखे विधान से ही अन्न देवे और उनके गोत्र, नाम आदि इसी प्रकार संकल्प में उच्चारण करे जैसे माता आदि व पिता का नाम उचरण किया है। (ततः प्राञ्जलिः) फिर हाथ जोड़े और प्रार्थना करे, नीचे लिखे श्लोक से—अन्नहीन क्रियाहीन विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमछिद्रमस्त्विति जपेत्॥ (दर्भेषुपविश्य गायत्रीं त्रिर्जपित्वा) कुशाओं पर बैठ कर पितृ गायत्री तीन बार जप कर नीचे लिखे वाक्य बोले।

मधु मधु मधिवति जपेत ऐसा भी पढ़े वा नीचे लिखे को भी पढ़े। ॐ मधुव्वाता ऋतायते मधुक्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्तोषधीः। ॐ मधु नक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिव ँ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। ॐ मधुमान्नो वनस्पति-र्मधु मां-मां अस्तु सूर्य्यः माध्वीर्गावोभवन्तु नः॥ (पितृ मन्त्रान्) पितरों के मन्त्रों का पाठ करे। पितरों के मन्त्र— ॐ उदीरतामवर उत्परास ऽउन्मध्यमाः पितरः सोम्यासः असुं ष्षऽइयुर-वृका ऽऋतज्ञास्तेनोवन्तु पितरो हवेषु॥ ॐ अङ्गिरसो नः पितरो नवग्वा ऽअर्थवाणो भृगवः सोम्या सः। तेषां वय ँ सुमतौ यज्ञिया नामपि भद्रे सौमनसे स्याम॥ ॐ आयन्तु नः पितर सोम्यसोग्निष्वात्ताः पथि-भिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधयामदन्तोधि ब्रुवन्तुते वन्त्वस्मान्॥ ॐ ऊर्जंवहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्परिस्रुतम्। स्वधास्थ तर्पयत मे पितॄन्॥ ॐ पितृभ्यः स्वधापिभ्यः

स्वधा नमः प्रषितामहेभ्यः । स्वधापिभ्यः स्वधा नमः ॥ अक्षन् पितरोमीमदन्त पितरो-तो तृपन्त पितरः पितरः शुन्धद्ध्वम् । ॐ षंचेहपितरो षेचनेहषांश्चविद्मयां २ उचन-प्रविद्य । त्वं वेत्थपतिते जानवेदः स्वधाभि-र्य्ययज्ञꣳ सुकृतञ्जुषस्व ॥ इत्यादि मन्त्र पढ़े । (अन्यानिनुपुरुष सूक्तादीनि पवित्राणि जपेत्) और भी उत्तम पुरुष सूक्त आदि याद हों तो ऋचा पढ़े । (ततः प्रागग्र कुशत्रयं भूभावास्तीर्य) फिर पूर्व को अग्र भाग कर तीन कुशा धरती में बिछावे । (जलेन प्रोक्ष्य) जल से छींटा देकर । (जल प्रोक्षितं सयवघृतमन्नं कुशादिना) जल से धुले जौ, घी के साथ अन्न को कुशा आदि लेकर नीचे लिखे श्लोक को पढ़कर कुशा पर अन्न बिखेर देवे । ॐ अन्नग्निदग्धाये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम ॥ भूमौदत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु पराङ्गितम् ॥ (ततः आचम्म हरि-स्मृत्वा) फिर आचमन कर हरि का स्मरण कर । (गायत्रीं त्रिर्जपेत्) पितृ गायत्री तीन बार जपे जो पहले लिख आये हैं । (चतुरस्रां पिण्डयोग्यां भूमिं परिष्कृत्य) चकोण पिण्डों के देने योग्य धरती बना कर अर्थात जहां पर पिण्ड अच्छी तरह से रक्खे जा सकें, ऐसी चकोर वेदी पृथ्वी पर १२ पिण्डों के रखने

लायक बनावे। (उत्तरोत्तर क्रमेण स्थानत्रयं प्रादेशमात्रं परिमाय) उत्तर-उत्तर क्रम से तीन स्थान प्रादेश मात्र अर्थात् अंगूठे और तर्जनी अंगुली जो अंगूठे के पास मे है दोनों चौड़ाने से बीच की जगह को प्रादेश मात्र कहते हैं, बनाकर (ततः प्राग्ग्रा-रेखां दर्भपिंजलीमूलेन) फिर पूर्व को अग्र भाग जिनका हो रेखा कुशा की जड़ से नीचे लिखे मन्त्र से खींचे। ॐ अपहता ऽअसुरारक्षाᳬ सिवेदिषद (इति रेखात्रयं कुर्यात) इस मन्त्र से तीन रेखा (लकीर) खींचे। (ततः प्रत्येकं रेखा त्रयोपरि) फिर तीनों रेखाओं पर एक-एक करके नीचे लिखे मन्त्र से आग का अंगारा घुमावे। ॐ ये रूपाणि प्रति-मुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परापुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकान् प्रणुदात्वस्मात्॥ इस मन्त्र से अंगारा घुमा कर छोड़ दे। (तदुपरि प्रत्येकं कुशत्रयमातीर्य्य) उन रेखाओं पर तीन कुशा बिछाकर। ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महा-योगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः॥ (इति त्रिजपित्वा) इस गायत्री मन्त्र को तीन बार जप कर। (प्रत्येकमवनेजनं दद्यात्) एक-एक रेखा पर अवनेजन (अर्थात् जल, जौ, चन्दन, फूल इनको दौनों में रखकर संकल्प द्वारा देवे। (तत्र क्रमः) इसमें प्रकार

लिखते हैं। (यव जल गन्ध पुष्पैर्नवपात्राणि पूरयित्वा कुशादीन्यादाय) जौ, जल, चन्दन, फूल नौ दोनों में धरके मोटक आदि लेकर नीचे लिखा संकल्प बोले। **ॐ अद्यामुक गोत्रे मातरमुक देवी नान्दीमुखी ओभ्युदयिक श्राद्धे पिण्डस्थाने ऽत्रावने निक्ष्वते नमः॥** (इति सर्वदक्षिण कुशत्रयमूलेमात्रे ऽवनेजनं दद्यात्) इस संकल्प को पढ़ कर सब कुशाओं के दाहिनी ओर की कुशा की जड़ में माता के लिये अवनेजन देवे। (किञ्चिज्जलमवशेषयेत्) कुछ जल बचाले। (एवमेवपात्रान्तर मादाय) इसी प्रकार और पात्र को जिसमें जौ, जल, फूल, चन्दन आदि हों, लेकर (तत्कुशमध्ये पितामह्यै अवनेजनं दद्यात्) उस कुशा के बीच में पितामही को अवनेजन देवे। जिसकी जड़ में माता को दिया है। (तत्कुशत्रयाग्रे प्रपितामह्यै अवनेजनं दद्यात्) उस कुशा के आगे की ओर प्रपितामही को अवनेजन देवे पर इनमें दोनों बार पितामही, प्रपितामही का गोत्र, नाम, माता के समान संकल्प में पढ़कर देवे, बिना संकल्प के नहीं देवे। (ततपश्चापरपात्रमादाय) फिर और पात्र ले जिसमें पूर्व लिखा जल, जौ आदि हों। (कुशादींश्चादाय) कुशादि को लेकर संकल्प बोले। **ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे ऽत्रावनेनिक्ष्वते नमः॥** (इति मध्यस्थित कुशमूले पित्रे ऽवनेजनं दद्यात्)

इस संकल्प से बीच की कुशा की जड़ में पिता को अवनेजन देवे। (किञ्चिज्जलमवशेषयेत्) कुछ जलादि बचा ले। (एवं तत्तत्कुशत्रयमध्याग्रयोः पितामह प्रपितामहाभ्याम वनेजनं दद्यात्) इसी प्रकार सब के पात्रों में पूर्व लिखी सब वस्तु चन्दनादि धर कर पितामह, प्रपितामह के गोत्र, नाम, उच्चारण करके अवनेजन देवे जिस प्रकार पिता को दिया है। (तत सप्तम पात्रमादाय) फिर सातवें पात्र में सब लिखी वस्तुओं को रखकर। (कुशादींश्चादाय) कुशा लेकर। ॐ अद्यामुकगोत्र मातामहामुक शर्मन्नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे पिण्डस्थाने ऽत्रावने निक्वते नमः॥ (इत्यपर कुशत्रयमूले मातामहाथावनेजनं दद्यात्) इसी प्रकार और तीन कुशों की जड़ में मातामह (नाना) को अवनेजन देवे। (एवं प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहयोरपि) इसी प्रकार प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह को अवनेजन देवे जैसे पूर्व में लिख आये हैं। इनके गोत्र और नाम उच्चारण कर संकल्प द्वारा ही, जैसा कि मातादि, पितादि का लिखा है। (ततो यवदधिवदरघृत मिश्रान्नेन पिण्डान् निर्माय) फिर जौ, दही, उन्नाब वा मुनक्का, घृत इन सबों को मिलाकर पिण्ड बनावे। (एषपिण्डंकुशादींश्चादाय) एक पिण्ड और मोटक जलादि लेकर माता को पिण्ड देने के लिये संकल्प बोले। ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुक देवी नान्दीमुखी आभ्युदयिक श्राद्धे एष पिण्डस्ते

नमः ॥ (इति तदवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात्) इस संकल्प से उसी अवनेजन स्थान पर पिण्ड देवे। (एवमेव पितामही प्रपितामहीभ्यां स्वीयस्वीयावनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात्) इसी प्रकार से पितामही, प्रपितामही को उन-उन के स्थान पर पिण्ड देवे परञ्च उनके गोत्र, नाम उच्चारण उसी प्रकार करे जिस प्रकार माता का गोत्र, नाम संकल्प में बोला है। (ततश्चतुर्थ पिण्डमादाय) फिर चौथे पिण्ड को हाथ में लेकर संकल्प पढ़े। **ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुक शर्मन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे एषतेपिण्डो नमः॥** (इति पित्रवनेजनस्थाने पिण्डं दद्यात्) इस संकल्प से पिता के अवनेजन स्थान पर पिण्ड देवे। (एवं पितामह प्रपितामहयोः) इस प्रकार पितामह, प्रपितामह आदि को भी अवनेजन स्थान पर पिण्ड देवे परञ्च इनका भी गोत्र, नाम उच्चारण करके पिण्ड देवे, जैसे पिता का गोत्र उच्चारण किया है। (ततः सप्तम पिण्डमादाय) फिर सातवें पिण्ड को हाथ में लेकर इस संकल्प द्वारा देवे। **अद्यामुकगोत्र मातामहामुक शर्मन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्धे एषते पिण्डो नमः ॥** (इति मातामहा वनेजन स्थाने मातामहाय पिण्डं दद्यात्) इससे मातामह को अवनेजन स्थान में पिण्ड देवे। (एवमेव प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहयोरपि) इसी प्रकार प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह आदि का गोत्र, नाम उच्चारण कर

अवनेजन स्थान पर पिण्ड देवे। (ततो दर्भमूलेकरं प्रोक्ष्याचम्य) फिर कुशा की जड़ से हाथ को साफ कर और आचमन कर। (हरिं स्मृत्वा) विष्णु का स्मरण कर। (अत्र मातरो मादयध्वम् यथाभागमावृषायध्वमिति पठित्वा) इसको पढ़ कर। (उदङ्मूखीभूय) उत्तर मुख होकर (पहाड़ की ओर मुंह करं) (श्वासंनियम्य तेनैव यथासुखं परावर्तयन्) श्वास (सांस) को रोक कर उसी से सुखपूर्वक लेता हुआ (चढ़ाता, उतारता हुआ) नीचे लिखे मन्त्र को पढ़े। ॐ अमीमदन्त मातरो यथाभागमावृषायि यतेति ॥ (एवमत्र पितरो मादयध्वं यथाभाग वृषायध्वमिति) इसी प्रकार पिता आदिकों के लिये ऊपर लिखे वाक्य को पढ़कर, उत्तर मुख होकर सांस रोक कर उसी सांस को उतारता हुआ नीचे लिखे वाक्य को बोले। ॐ अमीमदन्त पितरो मादयध्वं यथा भाग मावृषायिषत ॥ (एवमेव मातामहादि पक्षे मन्त्र जपः) इसी प्रकार जैसे मातादि पितादि के पक्ष में वाक्य बोले और सांस रोककर उतारा फिर वाक्य बोला ऐसे ही मातामहा शब्द को यथा भाग वाक्यं में जोड़कर पढ़े और उत्तर मुख हो सांस रोककर उतारता हुआ, अमीमदन्त माहामहा को यथा भाग में जोड़ कर बोले। (ततोऽवनेजनावशिष्ट जलेन प्रत्यवनेजनं दद्यात्) फिर अवनेजन के बचे हुवे जल से प्रत्यवनेजन देवे फिर उस जल को उन-उन के पिण्डों पर चढ़ावे। (तत्र क्रमः) इसमें क्रम दिखाते हैं। संकल्प द्वारा उस जल को पिण्डों पर देवे। पहले

माता के पिण्ड पर देने का संकल्प लिखते हैं। **ॐ अद्यामुक गोत्रे मातरमुक देवी नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्ध पिण्डेप्रत्यननेनिक्वते नमः ॥** (एवं पितामही प्रपितामहीभ्याम्) इसी प्रकार पितामही, प्रपितामही को प्रत्यवनेजन देवे, उनका गोत्र, नाम बोलकर संकल्प में माता का जैसा हमने लिखा है। फिर पिता के पिण्ड पर देवे, इस संकल्प से। **ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकु शमन् नान्दीमुखाभ्युदयिक श्राद्ध पिण्डे ऽत्रप्रत्यवने निक्वते नमः ॥** इस संकल्प से पिता के पिण्ड पर भी प्रत्यवनेजन देकर पितामह, प्रपितामह आदि के पिण्ड पर भी प्रत्यवनेजन संकल्प द्वारा उनके गोत्र, नाम उच्चारण करके प्रत्यवनेजन दे जैसा पिता के संकल्प में गोत्र और नाम उच्चारण किया है। **(ततोनीवींविस्रस्याचम्य)** फिर धोती की गांठ ढीली कर और आचमन कर हाथ धोकर। **(हरिं स्मृत्वा)** विष्णु का ध्यान कर। **(सूत्राण्यादाय)** वस्त्र वा सूत लेकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर संकल्प बोलता हुआ माता आदि के पिण्डों पर चढ़ावे।

ॐ नमोवो मातरो रसाय नमोवो मातरः शोषाय नमोवो मातरो जीवाय नमोवो मातरः स्वधायै नमोवो मातरो घोराय नमोवो मातरो मन्यवे नमोवो मातरो नमो-

वो गृहान्नो मातरो दत्तसतोवो मातरो देष्म-एतद्वो मातरो वास ॥ (इति) इस मन्त्र को बोल माता के लिये नीचे लिखा संकल्प पढ़े। (ततःकुशत्रयजलयव जलान्यादाय) संकल्प में जौ, तीन कुशा, जल लेकर। ॐ अद्यामुकगोत्रे मातरमुक देवी नान्दीमुखी आभ्युदयिक श्राद्धे पिण्डे एतत्तेवासो नमः। इस संकल्प से माता के पिण्ड पर सूत चढ़ाकर पितामही, प्रपितामही के पिण्ड पर भी सूत संकल्प द्वारा उनके नाम, गोत्र उच्चारण कर चढ़ावे। (ततः) फिर पिता आदि के पिण्ड पर चढ़ाने को सूत वा यज्ञोपवीत लेकर वा वस्त्र लेकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़ता हुआ संकल्प द्वारा उस सूत को चढ़ावे। सो मन्त्र लिखते हैं इसके बाद संकल्प लिखेंगे। ॐ नमोवः पितरो रसायनमो-वः पितरः शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरःस्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरो दत्तसतोवः पितरो देष्म एतद्वः पितरो वास ॥ (इत्यनेन पित्रादि पिण्डषष्ठोपरि प्रत्येकं सूत्रं दद्यात्) इस मन्त्र से पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह के छओं पिण्डों पर एक-एक सूत अलग-अलग मन्त्र बोलकर संकल्प द्वारा चढ़ावे

संकल्प । ॐ अद्यामुकगोत्र पितरमुकशर्मन्नान्दी-मुखाभ्युदयिक श्राद्धे पिण्डे एतत्तोवासो नमोवः ॥ (एवं पितामहादिभ्यः पञ्चभ्यः सूत्रं दद्यात्) इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह के पिण्डों पर सूत संकल्प द्वारा जिसमें गोत्र, नाम उनके पिता के संकल्प के गोत्र, नाम के समान ही चढ़ावे। (ततो गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूलादिभिः) फिर चन्दन, फूल, धूप, दीपक, पान आदि से (प्रत्येकं पिण्डानभ्यर्च्य) एक-एक पिण्ड का पूजन करके नीचे लिखे मन्त्र से जल पिण्डों पर छोड़े। ॐ शिवा आपः सन्तु॥ (इति जलम्) इससे जल छोड़ दे। ॐ सौमनस्यमस्तु ॥ (इति पुष्पम्) इससे फूल। ॐ अक्षतंचारिष्टमस्तु ॥ (इति तण्डुलान्) इससे चावल। (प्रत्येकं पात्रेषु निक्षिप्य) एक एक पात्र में छोड़कर। (कुशादिन्यादाय) कुशादि जौ, कुश, जल लेकर संकल्प पढ़े। ॐ अद्यामुकगोत्राया मातर-मुक देव्या नान्दीमुख्या आभ्युदयिक श्राद्धे दत्तै तदन्नपानादिभिः प्रीयताम् ॥ (इत्यक्षय्योदक मुत्सृजेत्) इस संकल्प से जल पिण्ड पर छोड़े और यह ध्यान करे कि इस जल से बहुत दिन तक तृप्त रहो। (एवं पितामह्याः प्रपितामह्याश्चा क्षय्योदकं दद्यात्) इस प्रकार

पितामही, प्रपितामही का भी गोत्र, नाम उच्चारण कर अक्षय्य उदक (जल) उनके पिण्डों पर चढ़ावे। **अद्यामुकगोत्रस्य पितरसुकशर्मणो नान्दीमुखस्याभ्युदयिक श्राद्धे दत्तै तदन्नपानादिभिः प्रीयताम्।** (इति पित्रे) इस प्रकार पिता के पिण्ड पर देवे। (एवं पितामहादि पञ्चभ्योऽक्षय्योदकं दद्यात्) इसी प्रकार पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह का गोत्र, नाम अलग-अलग संकल्प बोलकर उनके पिण्डों पर जल चढ़ावे। (ततः) **ॐ अघोरा मातरः सन्तु॥** (इतिमातृ पिण्डोपरि जलधारां दद्यात्) इस वाक्य से माता, पितामही, प्रपितामही के पिण्डों पर जल धारा देवे। **ॐ अघोराः पितरः सन्तु॥** (इति पित्रादि पिण्ड षष्ठोपरि जलधारां दद्यात्) इस वाक्य से पिता, पितामह, प्रपितामह, मातामह, प्रमातामह, वृद्ध मातामह के पिण्डों पर जल धारा देवे। फिर पितरों से आशीर्वाद मांगने के लिये नीचे लिखे मन्त्र से प्रार्थना करे। प्रार्थना मन्त्र—

ॐ गोत्रनो वर्धतां दातरो नोभिवर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च। श्रद्धाचनोमाव्यगमद्बहुदेयञ्चनोस्तु। अन्नञ्च नोबहुभवेदतिथींश्चलभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु माचयाचिष्मकञ्चन। एताः सत्या आशिषः

सन्तु ॥ (इत्याशिषः प्रार्थयेत्) इस मन्त्र से आशीर्वाद दे। (ततः कुशत्रयाणि प्रत्येकं मात्रादि पिण्डत्रये) फिर तीन कुशा माता, पितामही, प्रपितामही के पिण्डों पर एक-एक कुशा धर कर (पित्रादि पिण्डत्रये माता महादि पिण्डत्रये च धृत्वा) और पिता आदि मातामहादि के तीन-तीन पिण्डों पर धर नीचे लिखे मन्त्र से जल धारा देवे। ॐ ऊर्ज्जंवहन्तीर-मृतं पयः कीलालं परिस्रुतम्। स्वधोस्थ तर्पयत मे मातृः॥ (इति मात्रादि पिण्डोपरि दक्षिणाग्रां जलधारां दद्यात्) इससे मातादि तीनों के पिण्डों पर दक्षिण दिशा में अग्र भाग कर जल धारा देवे। (ततस्तथैव) फिर वैसे ही ॐ ऊर्ज्जंवहन्तीरित्यादि पठित्वा॥ इस मन्त्र को बोलकर (पित्रादि पिण्ड षष्ठोपरि जल धारां दद्यात्) पिता आदि के और माता महादि के पिण्डों पर जल धारा देवे। (ततः पिण्डानाघ्राय उत्थाय पिण्डाधारकुशा-नुल्मुकं च वन्हौ क्षिपेत्) फिर पिण्डों को सूंघकर और पिण्डों के नीचे की कुशा उठाकर और बालकर अग्नि में फेंक दे। (ततो ऽर्घपात्रा एयुत्तानी कृत्य दक्षिणां दद्यात्) फिर अर्घ पात्रों को उल्टा करके आचार्य को दक्षिणा देवे। (दक्षिणा द्रव्यञ्च फलमूले फलंमूलं वा प्रत्येकम्) दक्षिणा द्रव्य और फल, कन्द वा फल और सब एक को ही देवे वा एक-एक चीज आचार्य को देवे। संकल्प— ॐ अद्यामुक

गोत्राणां मातृ पितामही प्रपितामही नाम-मुकदेवीनां नान्दीमुखानामाभ्युदयिक श्राद्ध सम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतदाभ्युदयिक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमे फलमूले वनस्पति दैवते यथागोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥ इस संकल्प से माता सम्बन्धी विश्वेदेवों के श्राद्ध प्रतिष्ठा सिद्धि के लिये फल कन्द दक्षिणा आचार्य को देवे। **(एवं पित्रादिश्राद्ध सम्बन्धि विश्वेदेवा श्राद्ध दक्षिणां दद्यात्)** इसी प्रकार पिता, पितामह, प्रपितामह के नाम, गोत्र उच्चारण कर विश्वेदेवाओं के श्राद्ध पूर्णता सिद्धि के लिये दक्षिणा फलादि आचार्य को देवे। **(एवमेवमातामहादि श्राद्ध सम्बन्धि विश्वेदेवा श्राद्धं दक्षिणां च दद्यात्)** और ऐसे ही माता-महादि के श्राद्ध सम्बन्धी विश्वे देवों के श्राद्ध पूर्णार्थ दक्षिणा दे और फिर माता के श्राद्ध पूर्णार्थ संकल्प द्वारा दक्षिणा देवे। **ॐ अद्या-मुकगोत्राया मातरमुक देव्या नान्दीमुख्याः कृतैतदाभ्युदयिक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमे फल-मूले वनस्पति दैवते यथानाम गोत्राय ब्राह्मणा-यदक्षिणां दातुमहमुत्सृजे।** इससे माता के निमित्त दक्षिणा आचार्य को देवे। **(एवं पितामही प्रपितामह्योरपि)** इस प्रकार ही पितामही, प्रपितामही का गोत्र, नाम उच्चारण कर

दक्षिणा देवे फिर पिता का गोत्र उच्चारण करे नीचे लिखे संकल्प से— **ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितरमुक शर्मणो नान्दीमुखस्य कृतैतदाभ्युदयिक श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिमे फल मूले वनस्पति दैवते यथागोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे॥** (इत्यादि एवं पितामहादि श्राद्ध दक्षिणां दद्यात्) इसी प्रकार पितामहादि की श्राद्ध पूर्णार्थ दक्षिणा देवे और इसी प्रकार ऊपर लिखे क्रम से मातामहादि के श्राद्ध पूर्णार्थ देवे। (ततः) **ॐ बाजे बाजे वतबाजिनो धनेषुविप्रा अमृता ऋतज्ञाः॥** (इति मात्रादि विसर्जनम्) इस मन्त्र से मातादि का विसर्जन करे अर्थात् लोटा बजावे। (विश्वेदेवाः विसर्जनम्) विश्वे देवा का विसर्जन करे। (देवताभ्यः पि० दीप निर्वापणम्) दीपक बुझा दे। फिर आचमन कर हाथ जोड़े। (प्रमादात्०)

॥ इति नान्दीमुख श्राद्ध ॥

अथ सामग्री—गंगाजल, पलाश के पत्ते, कुशा, सराईं, चन्दन केशर, कपूर, जौ, चावल, पचरंग, कलावा, डोरी, अंगोछे, यज्ञोपवीत सुपारी, पान, फूल, धूप, मुनक्का या उन्नाब, दही, घृत, अलवे, रुई, दक्षिणा।

एकोद्दिष्ट श्राद्ध

अथ एकोद्दिष्ट श्राद्ध विधि :—

(पूर्वदिने कृतनियमः) पहले दिन जितेन्द्रिय आदि नियम से रहे। (श्राद्ध दिने प्रातः शुद्ध वस्त्रयुग्मेन कृतस्नानः) श्राद्ध के दिन प्रातःकाल उठ स्नान कर पवित्र वस्त्र धोती, अंगोछा और यज्ञोपवीत धारण करे। (प्रातः सन्ध्यां विधाय) प्रातःकाल की सन्ध्या कर, (कृतस्नानादिर्मध्याह्ने शुचिःशुक्ल द्विवासाः) फिर किसी कारण से शरीर मलिन हो गया हो तो दोपहर को दुबारा स्नान कर धोती और अंगोछा धारण करले, ये दोनों वस्त्र सफेद हों। (श्राद्ध समीपे द्विजमाह्वयेत्) श्राद्ध करने की जगह पंडित को बुलावे। (ब्राह्मणश्चोत्तरमुख आसने उपविश्य) पंडित उत्तर की तरफ मुंह करके आसन पर बैठे। (यजमानः श्राद्धदेश मागच्छेत्) यजमान जहां श्राद्ध करे वहां आवे। (ततः प्राङ्मुख आसने उपविश्य) पूर्व को मुंह करके आसन पर बैठे। (आचम्य प्राणायम्यच) गंगा जल से आचमन कर गायत्री मन्त्र से प्राणायाम कर अथवा ओ३म का तीन बार जप करले। (ततः श्राद्धभूमिं शुद्धमृतिका गोमयलेपेन ज्वलदंगारभ्रमणेन कुशादिभिश्व संस्कारयित्वा) फिर श्राद्ध

जहां पर हो, उस भूमि को शुद्ध मिट्टी तथा गौ के गोबर से लीप और जलते हुवे अंगारे को उस भूमि पर घुमाकर अंगारे को ईशान दिशा में रख कुशादि से साफ करे। **(श्वेतवस्त्रादिना वेष्टयित्वा)** एक सफेद अंगोछे से उस भूमि को ढके अर्थात् बिछावे। **(तिलान् गौरसर्षपांश्चावकीर्य)** तिल और सफेद सरसों के दाने उस पर बखेरकर **(यजमानः कुश पवित्रीधारणंकुर्यात्)** अब यजमान कुशा की पवित्री पहरे इस मन्त्र के प्रमाण पूर्वक :—

द्वौदर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्येत्रीण्यासने तथा।
पाद मूले शिखायान्तु सकृद्यज्ञोपवीतके॥१॥

अर्थ—दो कुशा की पवित्री सीधे हाथ की कनकी अंगुली के पास की अंगुली में पहरे। तीन कुशा वाली बायें हाथ की कनकी अंगुली के धोरे की अंगुली में पहरे, एक कुशा पैरों के नीचे, एक सीधी आंट में, एक अंगोछे में और एक चोटी में धरले। **(श्राद्ध हंतृन् काक कुक्कुटादीन पसरणार्थम्)** श्राद्ध के बिगाड़ने वाले कौवे और कुत्तों को वहां से भगादे। **(सिद्ध मिति पाचकान् स्पृष्ट्वा)** यजमान ऐसा कहे कि पारस सब ठीक तैयार हो गया, बनाने वाले कहदें कि सब ठीक हो गया है। **(रक्षादीपं प्रज्वाल्य)** फिर घृत का रक्षा दीपक जलाकर। **(तत ईश्वरं प्रार्थयेत)** ईश्वर की प्रार्थना करे अर्थात् दोनों हाथ जोड़े और यह श्लोक पढ़े। **ओ३म् नमो नमस्ते गोविन्द प्रसीद परमेश्वर। इदं श्राद्धं हृषीकेश रक्षतां सर्वतो दिशि॥१॥ (पुनः सर्षपान विकीर्य)**

फिर सरसों के दाने पूर्वादि दिशाओं में छोड़े इन मन्त्रों से— ॐ प्राच्यै नमः । पूर्व में । ॐ अवाच्यै नमः । दक्षिण में । ॐ प्रतीच्यै नमः । पश्चिम में । ॐ उदीच्यै नमः । उत्तर में । ॐ ऊर्ध्वं ब्रह्मणे नमः । ऊपर को । ॐ पृथिव्यै नमः । नीचे को धरती में । (पुनः कुशा पवित्रे श्राद्ध वस्तूनि सिंचयेत्) फिर तीन कुशाओं का मोटक लेकर श्राद्ध की सब सामग्री पर जल के छींटे इस मन्त्र से लगावे । ॐ अपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां गतोपिवा । यःस्मरेत् पुण्डरीकाक्षं सवाह्याभ्यन्तरः शुचिः ॥१॥ (पुनः प्रतिज्ञासंकल्पं त्रिकुशा क्षत जलैर्गृहीत्वा) मोटक, चावल, जल लेकर एकोदिष्ट श्राद्ध करने का संकल्प करे । ॐ तत्सद्विष्णु-र्विष्णुर्विष्णुरद्योन्नमः परमात्मने श्रीश्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वन्तरे अष्टाविंशति तमे कलियुगे कलि प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरतखण्डे आर्य्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैकदेशे पुण्यक्षेत्रे वेदोक्तफल प्राप्ति कामसिद्ध्यर्थे वर्तमान नाम सम्वत्सरे मासानां मासोत्तमे मासे ऽमुकपक्षे ऽमुक तिथौ ऽमुक वासरे

ऽमुकायने भास्करे ऽमुकगोत्रो ऽमुकशर्मा ऽस्मत्पितुरमुक शर्मणो मृतस्य साम्वत्सरिकै-कोद्दिष्ट श्राद्ध महं करिष्ये । सीधी अंगुली करके धरती पर जल छोड़दे । (ततः पितृ गायत्रीं त्रिवारं जपेत्) फिर पितृ गायत्री तीन बार जपे अर्थात् पढ़े । **ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥१॥** (ततोऽप-मव्यम् दक्षिणाभि मुखं पातित वाम जानुः) फिर अंगोछा और जनेऊ सीधे कन्धे पर कर दक्षिण दिशा को मुंह करे और बायां गोडा निवाले । (पलाश पात्रं निधाय) उस अंगोछे के ऊपर दक्षिण में एक ढाक का पत्ता रक्खे एक उसके नीचे धरे । (मोटक तिल जलान्यादाय कुशासन संकल्पं कृत्वा) मोटक, तिल, जल, कुशासन हाथ में लेकर संकल्प करे । **ॐ देश कालो स्मृत्वा अद्यामुक गोत्रोस्मत्पि-तुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे इदमासनन्ते स्वधा ।** (इति मोटक रूप मासनं तिल प्रोक्षितं दक्षिणाग्रं पितृतीर्थे नोत्सृजेत्) तिल सहित मोटक रूप आसन को दक्षिण दिशा की ओर अंगूठे और तर्जनी अंगुली के बीच में को ऊपर वाले पत्ते पर अग्र भाग करके रख दे । **ॐ अपहता असुरा रक्षा ७ सिवेदिषदः**

ये मन्त्र पढ़कर। (इति भोजनपात्रोपरि तिलान् विकीर्य) नीचे का पत्ता जो भोजन के लिये रक्खा है उसके ऊपर तिल के दाने छोड़कर ये मन्त्र पढ़े। ॐ आयान्तु नः पितरः सोम्या सोग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः। अस्मिन् यज्ञे स्वधया मदन्तोधि ब्रवन्तु अवन्त्वस्मान् ॥ (पुटपात्रं स्थाप्य) उसके पास ढाक का एक दौना धरे। (पवित्रे पात्रे धृत्वा) उस दौने में कुशा का पवित्रा गेरे। मन्त्र—ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यौ सवितुर्वः प्रसव उत्पुनाम्यच्छिद्रेण पवित्रेण सूर्यस्यरश्मिभि ॥१॥ (जलं प्रोक्ष्य) उस दौने में जल भरे। मन्त्र— ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये शंयोरभिस्रवन्तुनः। (तिलं प्रक्षिप्य) उसमें तिल छोड़े। मन्त्र—ॐ तिलोसि सोम देवत्यो गोसवो देव निर्मितः। प्रयत्नमद्भिः पृक्तः स्वधया पितृंल्लोकान्प्रीणाहिनः स्वाहा। (गंधं पुष्पाणि च तूष्णीं क्षिपेत्) फिर रोली, चन्दन, फूल चुपचाप छोड़ दे। (अर्घ्यं पात्रं वामहस्ते कृत्वा) उस अर्घ पात्र को बायें हाथ पर रखकर (पवित्रं भोजनपात्रे धृत्वा) उस दौने में से पवित्रा निकाल कर भोजन वाले नीचे के पत्ते पर रख दे।

(तदुपरि किंचिदुदकान्तरं दत्वा) उस पवित्रे पर कुछ जल अर्घ पात्र में से अंगूठे की तरफ को छोड़कर। (दक्षिण पाणिना संपुटितं विधाय) सीधे हाथ को पट करके उस दौने पर रखकर यह मन्त्र पढ़े— ॐ यादिव्या आपः पयसा संबभूवुर्या अन्तरिक्षा उतपार्थिवीर्या हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवा स ꣳ सोना सुहवा भवन्तु। (पुनरर्घ्य पात्रं सव्यहस्ते धृत्वा संकल्पं कुर्यात्) फिर उस दौने को सीधे हाथ में लेकर संकल्प करे। ॐ अद्यामुक गोत्रः पितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध एषते हस्तार्घ्यः स्वधा। (अर्घे पुनः प्रत्यर्घमस्तु वामपार्श्वे न्युब्जी कुर्यात्) उस दौने में से जो पवित्रा निकाल कर नीचे के पत्ते पर धरा है उसको उठाकर इस दौने में डालकर पितृ आसन के बाईं ओर उल्टा करदे। मन्त्र—पितृभ्यः स्थानमसीति न्युब्जी कुर्यात्। (अथ गंधादि दानम्) फिर रोली चन्दन, सुगन्ध वाले पदार्थ, फूल, धूप, पान, सुपारी, अंगोछा, जनेऊ आदि चढ़ावे। (संकल्पम्) ॐ अद्यामुकगोत्रो म्मत्पितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध एतानि गन्ध पुष्प धूप दीप ताम्बूल पूगी

फल एलालवंग तुलसीदल यज्ञोपवीतानि वासांसि तेस्वधा (ततो जलेन चतुष्कोणं मण्डलं कृत्वा भोजन पात्रा सनपात्रयोः) फिर जल हाथ में लेकर भोजन पात्र और आसन के पत्ते के चारों तरफ फेरदे। मन्त्र— ॐ यथाचक्रा युधो विष्णुस्त्रैलोक्यं परि-रक्षतु। एतन्मन्डलतोयागं सर्व भूतानि रक्षतु। (सव्यञ्जन मन्नं किञ्चिदग्र भागमादाय मोटकादिना) फिर मधुरादि रसयुक्त पके हुवे कुछ भोजन को हाथ में लिये हुवे मोटक के अग्र भाग से लगाकर नीचे लिखे मन्त्र को पढ़कर पृथ्वी मे छोड़ दे। मन्त्र—इद मन्न मेतद्भू-स्वामिपितृभ्यो नमः। (ततः सिद्धिमन्न मुष्णां रजतादि पात्रे कराभ्या मादाय) फिर पके गर्म अन्न अर्थात् पकवान को चांदी आदि के शुद्ध बर्तन में लेकर। (पितरं ध्यायन् मन्दं परिवेषणं कुर्यात्) पितर का ध्यान करता हुआ धीरे-धीरे अन्न अर्थात् भोजन रखता जावे। (ततः पुरुषाहारान्नं परिवेश्य) उस अंगोछे के ऊपर एक आदमी के भोजन करने के योग्य भोजन और सब पदार्थ रखकर (यथासम्भवं जलं घृतञ्च पात्रान्तरस्थं तत्रोपनीय अन्नं मधुनाभिधाय) फिर जैसा जल हो गंगाजल, कूपजल व नदी जल एक पात्र में भर कर धरे और एक पात्र में अन्न में घी व शहद मिलाकर उसमें धरे। मन्त्र—

ॐ मधुवाता ऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधीः मधुनक्त मुतोषसोमधु-मत्पार्थिव ँ रजः मधुद्यौरस्तु नः पिता ॥१॥ मधुमान्नो वनस्पतिर्मधुमां अस्तु सूर्यः माध्वी-र्गावो भवन्तु नः । (मधु मधुमध्विति च जपेत) मधु शब्द को तीन बार बोले । (ततः पितृपात्रं व्यस्त पाणिभ्यां स्पृष्ट्वा) फिर पिता के जल के दोने और अन्न के पात्र को दोनों हाथ उल्टे करके ढके । मन्त्र— ॐ पृथिव ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्व मुखेऽमृतेऽमृतं जुहोमि स्वाहा ॥१॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे समूढ मस्यपा ँ सुरे ॥२॥ (पुनः दक्षिणांगुष्ठेन स्पर्शयेत) फिर पिता के अन्न, जल के सीधे हाथ का अंगूठा लगाकर बतावे । मन्त्र—ॐ कृष्ण कव्य-मिदं रक्षमदीयम् ऐसा कहकर ॐ इद मन्नम् । ये अन्न है । ॐ इमा आपः ये जल है । ॐ इदमाज्यम् ये घी है । ॐ इदं हविः । ये खीर है । (तिलान् विकीर्य) अन्न पर और सब चीजों पर तिल के दाने छोड़ दे । मन्त्र— ॐ अपहता असुरारक्षा ँसि वेदिषदः । (ततः संकल्पं

कुर्यात्) जल, तिल लेकर संकल्प करे। ॐ अद्यामुक गोत्रः पितुरमुकशर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध एतत्तेऽन्नं सोपकरणं स्वधा॥ (ततोवाम हस्तमुद्धृत्य) फिर बायां हाथ उठाकर यह श्लोक पढ़े। ॐ अन्नहीनं क्रियाहीनं विधिहीनं च यद्भवेत्। तत्सर्वमच्छिद्रमस्त्विति पठेत्॥१॥ (मधुवातादि इति मन्त्रेण कुशेषूपविश्य) इस मधुवाता मन्त्र को पढ़ कर कुशाओं पर बैठे। (पुनः पुरुषसूक्त पाठयेत्) पुरुष सूक्त नीचे लिखे मन्त्रों को पढ़े। मन्त्र— ॐ सहस्रशीर्षाः पुरुषः सहस्राक्षः सहस्रपात् सभूमिꣳ सर्वतः स्पृत्वात्य-तिष्ठ द्दशांगुलम्॥१॥ पुरुष एवेदꣳ सर्वं य्यद् भूतंषच्च भाव्वम्। उतामृतत्वस्य्ये शानो यद-न्नेनातिरोहति॥२॥ एतावानस्यमहिमातो-ज्यायांश्च पुरुषः। पादोस्य विश्वा भूतानि त्रिपादस्या मृतदिवि॥३॥ त्रिपादूध्व उदैत्-पुरुष पादोस्येहा भवत्पुनः। ततोविष्वङ् व्यक्रामत्साशनानशनेऽअभि॥४॥ ततो विराडजायतविराजो अधि पुरुष सजातो

अत्यरिच्यत पश्चाद्भूमिमथो पुरः ॥५॥ तस्माद्यज्ञात्सर्व हुतः संभृतंपृषदाज्यम । पशूंस्तांश्चक्रे वायव्यानारण्याग्राम्याश्चये ॥६॥ तस्माद्यज्ञात्सर्वहुत ऋचः सामानि यज्ञिरे छन्दाꣳसि यज्ञिरेतस्माद्यजुस्तस्माद-जायत ॥७॥ तस्मादश्वा अजायन्त येकेचो भयादतः । गावोहयज्ञिरे तस्मात्तस्माज्जाता ऽअजावयः ॥८॥ तंयज्ञंबर्हिषिप्रौक्षंपुरुषं जात-मग्रतः तेनदेवा अयजन्तसाध्या ऋषयश्चये ॥९॥ यत्पुरुषंव्यदधुः कतिधाव्यकल्पयन् । मुखं किमस्यासीत् किम्बाहू किमूरूपादा उच्येते ॥१०॥ ब्राह्मणोस्यमुखमासीद्बाहू राजन्यः कृतः ऊरूतदस्ययद्वैश्यः पद्भयाꣳ शूद्रो अजायत ॥११॥ चन्द्रमामनसोजातश्-चक्षोः सूर्यो ऽअजायत । श्रोत्राद्वायुश्चप्राण-श्चमुखादग्निरजायत ॥१२॥ नाभ्याआसी-दन्तरिक्षꣳ शीर्ष्णो द्यौः समवर्त्ततपद्भयां भूमिर्दिशश्रोत्रांत्तथालोकां अकल्पयन् ॥१३॥

यत्पुरुषेण हविषा देवो यज्ञमतन्वत बसन्तो
स्यासीदाज्यं ग्रीष्म इध्मः शरद्धविः ॥१४॥
सप्तास्यास्त्रिः सप्तसमिध कृताः।
देवायद्यज्ञ तन्वाना अबध्नन् पुरुषं पशुम्॥१५॥
यज्ञेनयज्ञमय जन्तदेवास्तानि धर्माणि
प्रथमान्यासन्। तेहनाकंमहिमा नः सचन्त
यत्रपूर्वे साध्याः सन्ति देवाः (इति पुरुष सूक्तम्)
आशु शिशानो वृषभोनभीमो घना घनः
क्षोभणश्चर्षणीनां सङ्क्रन्दनो निमिष ऐष
वीरः शतꣳ सेना इत्यादि मन्त्र पठेत्।
(यथा शक्ति अन्यान्यपि पवित्राणि रुचि स्तवानि
पठेत्) और भी यथा रुचि और स्तोत्रों का पाठ करे। जैसे नीचे
लिखा श्लोक है। श्लोक— ॐ नमस्तुभ्यं विरुपाक्ष
नमस्ते ऽनेक क्षत्तुषे। नमः पिनाकहस्ताय
वज्र हस्तायवै नमः। (सव्य हस्ते विकासनं
गृहीत्वा) एक तीन पत्र वाली कुशा को सीधे हाथ में लेकर ये मन्त्र
पढ़े। मन्त्र— असंस्कृत प्रणीतानां त्यागिनां
कुलभागिनाम्। उच्छिष्ट भाग धेयानां

दर्भेषु विकराम्यहम् । (उच्छिष्ट समीपे दक्षिणाग्रे कुशत्रयमास्तीर्य) पितरों के अन्न के पास दक्षिण दिशा में उस कुशा का अगला भाग कर धरे। (**जलेन सिक्तम्**) उस पर जल का छींटा लगा कर। (**अन्न घृत मेलेन विकरपिण्डं दद्यात्**) पूरी और घी मिलाकर एक लम्बा पिण्ड हाथ में ले और ये मन्त्र पढ़े। **ॐ अग्निदग्धाश्च ये जीवा ये प्रदग्धाः कुले मम। भूमौदत्तेन तृप्यन्तु तृप्तायान्तु परां गतिम् ॥१॥** (सव्यं कृत्वाचम्य) सव्य हो आचमन करे। (**ॐ गंगा विष्णुत्रिवारम् पठेत्**) इसको तीन बार पढ़े। (**हरिस्मृत्वा गायत्रीं मधुवाता इत्यादिं पठेत्**) भगवान का ध्यान कर गायत्री मन्त्र और मधुवाता मन्त्र को पढ़े। (**ततो अपसव्यं दक्षिणाभि मुखं कृत्वा**) फिर अंगोछा जनेऊ सीधे कन्धे पर करके दक्षिण दिशा को मुंह करे। (**वेदिकां कृत्वा जलेन प्रोक्षणम्**) एक हाथ के बराबर चारों तरफ से चकोर पीली मिट्टी या गंगा रज की वेदी बनावे। उस पर जल का छींटा देवे। मन्त्र—**ॐ अयोध्या मथुरा माया काशी कांचीरवन्तिका। पुराद्वारावताज्ञेया सप्तैता मोक्ष दायका।** अब एक कुशा को अंगूठे और अंगूठे के पास की अंगुली से पकड़ और बायें हाथ का अंगूठा और उसके पास की तर्जनी अंगुली को उस वेदी के ऊपर फैलाकर धरे। अंगूठे से लेकर अंगुली तक उस कुशा से लकीर खींचे। मन्त्र— **ॐ**

अपहता असुरा रक्षाꣳसि वेदिषदः । (ततो दर्भपिंजुलीमुत्तरस्यां दिशि क्षिपेत्) फिर उस कुशा को उत्तर दिशा में फेंक दे । (ज्वलदंगारं वैदिकायां चतुर्दिशि भ्रामयित्वा) कुशा जलाकर या अंगारा वेदी के चारों तरफ फिरा देवे । मन्त्र—**येरूपाणि प्रतिमुञ्च माना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति परा पुरोनि पुरोयेभ-रन्त्यग्नीष्टां ल्लोकान्प्रणुदात्वस्मान् ॥१॥** (तदंगारं दक्षिणतोनि दध्यात्) उस कुशा को या अंगारे को दक्षिण दिशा में रखदे । (ततस्तत्र रेखायां छिन्नमूल कुशा-नास्तीर्य) फिर वहां जड़ से अलग की हुई तीन कुशा वेदी की लकीर पर रखदे । (सव्योभूत्वा त्रिवारं पितृ गायत्रीं जपेत्) सव्य होकर पितृ गायत्री का तीन बार जाप करे । मन्त्र—**ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च । नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥१॥** (ततोऽपसव्यम् दक्षिणाभिमुखः) फिर अंगोछा, जनेऊ सीधे कन्धे पर कर दक्षिण को मुंह करके (एक-मर्घ्यंपुटके जल तिल गंध पुष्पाणि धृत्वा) एक दौने में जरा सा जल, चन्दन, तिल, फूल धेरकर । (एवं पात्रं वामहस्ते कृत्वा पुनः दक्षिण हस्ते आदाय) उस दौने को उल्टे हाथ से उठाकर फिर सीधे हाथ पर धरले । (मोटकतिल जलान्या-

दाय संकल्पं कृत्वा) मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्रोऽमुकपितरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध स्थानेऽत्रावने जलं निद्वते स्वधा। (आस्तृतदर्भमूलावने जलं दद्यात) उस दौने का जल वेदी की कुशा के ऊपर चढ़ावे। किंचित्जलं पुटके ऽवशिष्येत्) कुछ जल उस दौने में रहने दे। (ततस्तिल जलव्यंजन घृतमिश्रितैरन्नैः पिण्डं दद्यात्) फिर जल, तिल, पूरी, घृत, मुनक्का मिले हुवे अन्नों का एक पिण्ड। (विल्वोपमं निर्माय) बेल के बराबर गोल बना कर। (वामेन पाणिना गृहीत्वा पुनः सव्यहस्ते धृत्वा) बायें हाथ से उठाकर सीधे हाथ में ले। (मोटक तिल जलान्यादाय संकल्पं कृत्वा) मोटक, तिल, जल लेकर पिण्ड का संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्रोऽस्मत्पितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध एषः पिण्डस्ते स्वधा। (छिन्नमूलोपरि पिण्डं दद्यात्) वेदी की कुशा के ऊपर रखदे। (ततः कुश मूलेन करप्रोक्षणम्) फिर कुशा की जड़ से हाथ को धोवे अर्थात् पूंछे। (सव्यो भूत्वाचम्य हरिंस्मृत्वा) सव्य हो आचमन कर भगवान का ध्यान करके। (अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः) अपसव्य हो दक्षिण दिशा

को मुंह कर ये मन्त्र पढ़े। मन्त्र— ॐ अत्र पिता मा दयध्वम् यथा भागं मावृषायध्वम्। (वामाऽवर्ते उदङ् मुखींभूय श्वासं निरुध्य पितृभास्कर मूर्ति ध्यानं दक्षिणेन प्रत्यावर्तयेत्) उत्तर दिशा से श्वांस खींचकर पितर और सूर्य नारायण का ध्यान करता हुआ दक्षिण दिशा को छोड़ दे। मन्त्र— ॐ अमीमदन्त पिता यथाभागं मा वृषायिष्ट ॥१॥ (ततः पूर्वदत्तावशिष्टयुतमेवावने जल पात्रमादाय) फिर पहले दिये हुवे जल के दौने में जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यैतत्सदमुकगोत्रो ऽमुकपितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्ड प्रत्यवने निदधते स्वधा। (ततो नीवीं विस्रस्य) फिर धोती की आगे की अन्टी ढीली करदे या कुशा निकालदे। (सव्यमाचम्य) सव्य होकर आचमन करे। मन्त्र— ॐ गंगाविष्णुस्त्रिवारं पठेत। इसको तीन बार पढ़े। (हस्तौ प्रक्षाल्य) हाथ धो डाले। ॐअपवित्रः पवित्रोवा सर्वावस्थां०। (पुनरसव्यम्) फिर अपसव्य होकर (वामेन पाणिना सूत्रमादाय) बायें हाथ में सूत लेकर या जनेऊ लेकर। (पुनः दक्षिणकरे कृत्वा) फिर उसको सीधे हाथ में लेकर पिण्ड पर चढ़ावे और ये मन्त्र पढ़े। मन्त्र— ॐ नमोवः पितरो रसाय नमोवः पितरः

शोषाय नमोवः पितरो जीवाय नमोवः पितरः स्वधायै नमोवः पितरो घोराय नमोवः पितरो मन्यवे नमोवः पितरो नमोवो गृहान्नः पितरः पितरो देहि दत्तः सतः पितरो देष्मः एतत्तो पितृवासः ॥१। (मोटकतिलजलैः संकल्पम्) मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे। ॐ अद्यामुकगोत्रोमुक पितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध पिण्डे एतत्ते वासः स्वधा। (ततः पितरमुद्दिश्य) फिर पितर का ध्यान करे। (पिण्डे गंधादिदानम्) पान पर सब सामग्री गन्धादिं, रोली, तिल, फूल, सुपारी रख कर पिण्ड पर चढ़ावे एक घी की बत्ती बाले। (संकल्पं कृत्वा) ॐ अद्यामुकगोत्रो ऽमुकपितुरमुक-शर्मा साम्वत्स रकैकोद्दिष्ट श्राद्ध पिण्डोपरि एतानि गंधादीनि स्वधा। (पुनः पिण्डेषु पुरुषाहारान्नं सजलं परिवेष्य) फिर पिण्ड के धोरे एक मनुष्य के पेट भरने लायक भोजनादि धर कर। (संकल्पं कृत्वा) ॐ अद्यामुकगोत्रो ऽमुकपितुरमुक शर्मा साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे पिण्डाग्रे दत्तं तदन्नपानादिकं भक्ष्यमस्तु। संकल्प का जल पिण्ड

के ऊपर अंगूठे के नीचे को छोड़ दे। (भोजनपात्रे एतानि वस्तूनि क्षिपेत्) पितर के नीचे के पत्ते पर ये चीजें छोड़े। ॐ शिवा आपः सन्तु। (इति जलम्) जल छोड़े। ॐ सौमनस्यमस्तु। (इति पुष्पम्) फूल छोड़े। ॐ अक्षतं चारिष्टमस्तु तन्दुलम्। चावल छोड़े। (सव्येन पिण्डोपरि जलधारां दद्यात् पूर्वाग्रामः) फिर सव्य हो पिण्ड के ऊपर पूर्व की हाथ का अग्र भाग करते हुवे जल की धारा छोड़ता जावे। मन्त्र—ॐ अघोरः पितास्तु। (पूर्वाभिमुखो भूत्वा करबद्धो मन्त्रं पठित्वा) पूर्व को मुंह कर, दोनों हाथ जोड़, भगवान् से यह आशीर्वाद मांगे। मन्त्र—ॐ गोत्रंनोवर्द्धताम् दातारोनोभि वर्द्धन्तां वेदाः सन्ततिरेव च श्रद्धाचनो मो व्यगम-द्बहुदेयञ्चनोस्तु। अन्नञ्चनो बहुभवेदतिथींश्चलभेमहि। याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्मकञ्चन। एताः सत्या आशिषः सन्तु॥ (अपसव्यं दक्षिणाभिमुखः) अपसव्य हो दक्षिण को मुंह करे। (पिण्डे सपवित्र कुशोपरि दुग्ध धारां दद्यात्) फिर पिण्ड के ऊपर पवित्रा सहित अच्छी कुशा पर दूध की धारा अंगूठे के नीचे को देवे। मन्त्र—ॐ ऊर्ज्जंवहन्ती-

रमृतं घृतं पयः कीलालं परिस्रुतम् । स्वधास्थतर्पयत मे पितरम् । इस मन्त्र से फिर जल की धारा दे । (पिण्डं नम्नीभूय) पिण्ड के आगे धरती में माथा झुकावे । (पुनः पिण्डमुत्थापयेत्) फिर पिण्ड को दोनों हाथों से उठाकर थाली में रखले । (पिण्डमाघ्राय) पिंड को सूंघे । (पिण्डा धारकुशान्तुल्मुकं च वह्नौ क्षिपेत्) पिण्ड के नीचे की कुशा वेदी पर से उठाकर और जली हुई कुशा को अग्नि में डालदे । (आचार्याय रजतमयी दक्षिणा संकल्पम्) श्राद्ध कराने वाले को चांदी की दक्षिणा देने का संकल्प करे । ॐ अद्यहेत्यादि अमुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्य साम्वत्सरिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं अमुक गोत्राय ब्राह्मणायाचार्यायाहं संप्रददे ॥ श्राद्ध कराने वाले को वह दक्षिणा दे देवे । (अर्घ्यपात्र मुत्तानीकृत्य) अर्घ पात्र जो दौना है उसको सीधा करदे । (अभिरमतामिति विसर्जनम्) पितर के पत्तों को हिलादे और कहे कि आप जाइये । ॐ वाजे वाजे वत वाजिनो धनेषु विप्रा अमृता ऋतज्ञाः । अस्यमध्वः पिबतमादय-ध्वं तृप्तायान्तु पथिभिर्देवयानैः ॥१॥ (पात्र-नदनम्) लोटे में चुटकी मारकर बजादे । (सव्यो भूत्वा)

सव्य हो पूर्वाभि मुख करके। ॐ देवताभ्य० (इति त्रिवारं जपेत्) इस मन्त्र को जो कई बार पीछे लिखा जा चुका है तीन बार पढ़कर। (ततोऽपसव्यम्) फिर अपसव्य हो दक्षिण दिशा को मुख कर। (पाणिभ्यां रक्षा दीपं निर्वाप्य) दोनों हाथ में जल भर कर दीपक के ऊपर छोड़ दे जिससे दीपक बुझ जावे। (हस्तौ पादौ प्रक्षाल्याचम्य च) हाथ पांव धोकर आचमन करे। मन्त्र—ॐ गंगाविष्णु० (त्रिवारं जपेत्) इस मन्त्र को तीन बार पढ़े। (सव्यम् पूर्वाभिमुखो भूत्वा) सव्य होकर पूर्व को मुंह करके दोनों हाथ जोड़कर यह श्लोक पढ़े।

ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषुयत्।
स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥१॥

(इति एकोद्दिष्ट श्राद्ध विधिः समाप्ता)

अथ शय्या दानम्

अब शय्या अर्थात् खाट या पिलंग दान कराने की विधि लिखते हैं—(विष्णुशय्याशिरः पूर्वे कुर्यात्) इस शय्या का सिराहना पूर्व दिशा को करके बिछावे। (प्रथमं गणेशादि वेदी निर्माय) पहले गणेशादि की वेदी बनाकर। (गणपत्यादि नवग्रहादि स्थापनम्) गणेश नवग्रह और भी देवता रंग, आकार सहित बनाकर। (स्वस्तिवाचनं पठनीयम्) चावल लेकर और सब

मनुष्यों को देकर— ॐ गणानान्त्वा गणपति० ये मन्त्र पढ़ना चाहिये। पूरा हो जाने पर गणेश जी के ऊपर सब मनुष्य चावल छोड़ दें। (पुनः प्रतिज्ञासंकल्पम्) फिर चावल जल लेकर पूजन करने का संकल्प करे। संकल्प— ॐ देश कालौ स्मृत्वा अमुकगोत्रो ऽमुकशर्मा ऽमुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्य वार्षिके कोद्दिष्ट श्राद्धाङ्गभूत शय्यादान साङ्गता सिद्ध्यर्थं यथोपचारेण गणेशप्रभृति पूजन महं करिष्ये। सकल्प का जल सीधी अंगुलियों पर को जमीन पर छोड़ दे। (स्वैः स्वैर्मन्त्रैर्गणेशादि पूजनम्) जिस देवता का जो मन्त्र है उस-उस से उन-उन का पूजन करना चाहिये। (अथ द्विजदम्पति पूजनम्) फिर ब्राह्मण और ब्राह्मणी का पूजन करे, जिसको शय्या अर्थात् पिलंग या खाट देनी हो। (पुनर्द्विज दम्पति हस्तौ पादौ प्रक्षाल्य) पहले ब्राह्मण और ब्राह्मणी के हाथ और पैर धोवे। मन्त्र—ॐ यत्-फलं कपिला दाने कार्तिक्यां ज्येष्ठ पुष्करे। तत्फलं पाण्डव श्रेष्ठं विप्राणां पाद शौचने ॥१॥ (यजमानं हस्तौ प्रक्षाल्य) फिर अपने हाथ धो डाले। (कुशत्रय गंगाजलेन शय्यां सिञ्चेत्) कुशा से गंगा जल का छींटा लगावे। मन्त्र— ॐ अपादत्रः

पवित्रोवा० ॥१॥ (द्विज दम्पति शय्योपरि उदन् मुखश्चोपविश्य) ब्राह्मण और ब्राह्मणी पलंग पर उत्तर को मुंह करके बैठें। (पुष्प माल्यां द्वयो हृदयेऽर्पयेत्) दोनों के गले में पुष्पों की माला पहरावे। मन्त्र— ॐ श्रीश्चते लक्ष्मीश्च पत्न्या० ॥ (द्वयोर्हस्ते श्री फलं धृत्वा) दोनों के हाथ में, ब्राह्मण को नारियल और ब्राह्मणी को गोला देवे। (काञ्चन पुरुष पूजनम्) अब सोने की जो मूर्ति विष्णु भगवान की है उसका पूजन इस विधि से करे। (ताम्रपात्रे स्थापयित्वा) मूर्ति को तांबे के कटोरे मे रखकर (दुग्धेन स्नानं कारयेत्) गौ के दूध से स्नान कराकर। पुनः गंगाजलेन स्नानम्) फिर गंगा जल से नहलावे। मन्त्र—ॐ नमोस्त्वनन्ताय सहस्र मूर्तये सहस्रपादाक्षिशिरोरुबाहवे। सहस्र नाम्ने पुरुषाय शाश्वते सहस्र कोटियुगधारिणे नमः ॥१॥ नमः कमलनाभाय नमस्ते जलशायिने। नमस्ते केशवानन्त वासुदेव नमोस्तुते ॥२॥ अंगूठे से मूर्ति को दबाकर सब पानी कटोरे में से गिरा दे। (गंधाक्षतपुष्प फलादिभिः संपूज्य) रोली से या चन्दन, केशर से पूजन कर चावल, फूल, फल, सुपारी, पान, मीठा, धूप, दीप चढ़ाकर कपूर बाल दे। (पीतवस्त्रेण काञ्चनपुरुष माच्छाद्य) पेला रेशमी कपड़ा उस पर उढ़ावे। (प्रार्थना) हाथ जोड़कर ये मन्त्र पढ़े।

ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधानिदधे पदम् । समूढमस्यपाᳬ सुरे ॥१॥ (पश्चाद्वरण संकल्पम्)

फिर ब्राह्मण के वरण का एक पान पर कलावा, रोली, चावल, पूल, पैसा धर कर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यहेत्यादि देशकालौ स्मृत्वा ऽमुक गोत्रो ऽमुक शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्याक्ष स्वर्गलोक फलप्राप्त्यर्थं शय्यादानार्थ मेभि-र्वर्ण द्रव्यै गंधाक्षतपुष्पताम्बूलरमुकगोत्रम-मुकशर्माणं ब्राह्मण त्वा महं वृणे। उस पान को उसी ब्राह्मण को देदे जो शय्या पर बैठा है उस पान पर जो रोली धरी है उस रोली से उस ब्राह्मण का तिलक करे। मन्त्र—ॐ नमो ब्रह्मण्यदेवाय० ॥ उसी कलावे से पौंहची बांधे। मन्त्र—ॐ व्रतेन दीक्षामाप्नोति० ॥ शय्यायै नमः ब्राह्मणाय नमः त्रिवारं संपूज्य। इस मन्त्र को बोलता हुआ शय्या पर तीन बार रोली के छींटे लगाकर अक्षत और फूल आदि छोड़ सिराहने की तरफ की पट्टी में कलावा बांधकर यजमान अपने सीधे हाथ में जल, चावल, कलावा, पैसा लेकर संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यहेत्यादि देश-कालौ स्मृत्वा अमुक गोत्रो ऽमुक शर्मा अमुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्य

वार्षिकैकोद्दिष्ट श्राद्धे चतुर्वर्ग पितृगतषष्टि वर्षसहस्रावच्छिन्न स्वर्गलोक मही तत्वतदुत्तर विपुलकुल जन्म कामनायै मां शय्यां स. तूलकां गर्मितास्तरणोत्तरच्छदाच्छादन पटं शय्याबन्धनचामर सुगन्ध द्रव्याज्यं यथो- पकरणशय्यांचितसामिग्री सहितां विष्णु- देवतां यथानाम गोत्राय ब्राह्मणाय तुभ्यमहं संप्रददे । (शय्यां ददामीति द्विजकरे जलदानम्) शय्या देता हूँ ऐसा कहकर ब्राह्मण के हाथ में संकल्प का जल देदे। (ब्राह्मणः स्वस्तीति वदेत्) ब्राह्मण तुम्हारा कल्याण हो ऐसा कहे। (दानप्रतिष्ठा चन्द्रमयी दक्षिणा जलाक्षत युक्ता संकल्पम्) दान प्रतिष्ठा का १) रुपया, जल, चावल लेकर संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यहेत्यादि० कृतैतच्छय्या- दानं प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्रदैवतं यथा नामगोत्राय ब्राह्मणायाहं संप्रददे ॥ ये दक्षिणा उसी ब्राह्मण को देवे। (पुनः काञ्चनपुरुष संकल्पम्) अब सोने की जो विष्णु भगवान की प्रतिमा है उसको कटोरे सहित उठाकर जल, चावल लेकर संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्य- हेत्यादि देशकालौ स्मृत्वा ऽमुक गोत्रस्य

पितुरमुकशर्मणो मृतस्य वार्षिकैकोद्दिष्ट श्राद्ध सम्बन्धि शय्यादानं साङ्गतासिद्ध्यर्थं लक्ष्मी नारायण प्रीत्यै इदं फल वस्त्र समन्वितं कोञ्चनपुरुषं विष्णु दैवतं यथोनाम गोत्राय ब्राह्मणायाह संप्रददे । उसी ब्राह्मण को देदे। (स्वस्तीति प्रतिवचनम्) वह ब्राह्मण स्वस्ति कहे। (दान प्रतिष्ठा संकल्पम्) अब दान प्रतिष्ठा का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यहेत्यादि० कृतैतत्कोञ्चन पुरुषदान प्रतिष्ठार्थमिदं ताम्रखण्ड मर्कदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायाहं संप्रददे । यह भी दक्षिणा उसी ब्राह्मण को देदे। (अथ वस्त्र दानम्) अब कपड़ो का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो देहाच्छादन कामनायै इमानि वस्त्रा णिद्विज दम्पती परिधानीयानि बृहस्पति दैवतं यथानाम गोत्रायाहं संप्रददे। ब्राह्मण को देदे। (अथ पात्र संकल्पं कुर्यात्) अब बर्तनों का संकल्प करे। ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो वार्षिकैकोद्दिष्ट श्राद्धदिने महद्भोजन जल पान कर्मार्थमिमानि पञ्च भाजनानि कांस्य

पित्तलमयानि विश्वकर्म दैवतानि यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायाहं संप्रददे । ये भी ब्राह्मण को देदे । (अथ दीप दानम्) अब दीपक को पतीलसोत पर धरके संकल्प करे । संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणोऽन्धकार निवृत्यर्थमिमंदीपकमाधारसहितं अमुक त्वष्टाग्नदैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायाहं संप्रददे । ब्राह्मण को देदे । (अथ सौभाग्य मंजूषा दानम्) फिर सन्दूक का संकल्प करे । ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो मृतस्य शृङ्गारकरणार्थमिमां सौभाग्य मंजूषां यथा नाम गोत्रायाहं संप्रददे । (अथ गोदानम्) फिर गाय की दक्षिणा या गाय की पूंछ पकड़कर संकल्प करे । संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्य वैतरणी तरणार्थं गोदानजन्यफल प्राप्ति कामो यशाशक्ति वस्त्रादिसहितां अथवा गो सम्बन्धिनीं दक्षिणां चन्द्रदैवतं यथा नाम गोत्रायाहं संप्रददे । ब्राह्मण के हाथ में दक्षिणा या गाय की पूंछ पकड़ा दे । ब्राह्मण स्वस्ति ऐसा कहे । (अथ पादत्राण दानम्) फिर जूते आदि का संकल्प करे ।

संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्रस्य पितुरमुकशर्मणो मृतस्य यम मार्गे तप्त बालुका भू दुर्ग संतरणायेम उपानहावुत्तानां गिरं दैवतं यथा नाम गोत्रायाहं संप्रददे। ब्राह्मण को देदे। (अथ छत्र दानम्) फिर छतरी और लाठी का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुकगोत्रस्य पितुरमुक शर्मणो मृतस्यातपनिवारणार्थमिदं छत्रं यष्टिका सहितमुत्तानां गिरं दैवतं यथानाम गोत्रायाहं संप्रददे। (अथ भूषणसंकल्पम्) फिर जेवर का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुकगोत्रो ऽमुकशर्मा वार्षिकैकोद्दिष्ट श्राद्धदिने इदं रजत स्वर्ण भूषणं कटककुण्डलबाहुवलय मुद्रिकादि कर पादाङ्गुलीय हृदय सम्बन्धि विश्वकर्मा दैवतं यथानाम गोत्राय ब्राह्मणायाहं संप्रददे।

यह भी ब्राह्मण को दे, ब्राह्मण स्वस्ति ऐसा कहे।

॥ इति एकोद्दिष्ट श्राद्ध ॥

नोट—एकोद्दिष्ट श्राद्ध विधि की सामग्री पुस्तक के अन्त में देखिये।

पार्वण श्राद्ध

अथ पार्वण श्राद्ध विधि :—

(अपराह्णे स्नातः) दोपहर के पीछे स्नान करे। (शुद्ध द्विवाससी परिधायः) पवित्र वस्त्र पहरे धोती, अंगोछा, जनेऊ सहित। (शुचिराचम्यः) गंगा जल का आचमन करे। मन्त्र— ॐ गंगा विष्णु ॥ (त्रिवारं पठेत्) तीन बार कहे। (श्राद्ध देश मागच्छेत्) जहा श्राद्ध करे वहां बैठे। (तत प्रांगमुख उपविश्य) पूरब को मुंह करके बैठे। (पवित्री धारणाम्) फिर दोनों हाथ में कुशा की पवित्री पहरे इस मन्त्र के प्रमाण से। मन्त्र—ॐ द्वै दर्भौ दक्षिणे हस्ते सव्ये त्रीणि कुशास्तथा। पादमूले शिखायान्तु सकृत यज्ञोपवीतके ॥ दो कुशा की पवित्री सीधे हाथ की कनकी अंगुली के धोरे की अंगुली में पहरे। तीन को बायें हाथ में, एक कुशा पैरों के तले, एक आंट में, एक अंगोछे या यज्ञोपवीत में, एक चोटी में धरे। (सिद्धान्नं सम्भवे द्वीति पाचकान स्पष्ट्वा) यजमान ऐसा कहे कि पारस ठीक हो गया ? बनाने वाला कहदे कि सब ठीक हो गया। (यवै पुष्पै त्रिवारं भूमि पूजयेत्) जौ फूल लेकर तीन बार धरती में

में धरे। मन्त्र—पृथ्वव्यै देव्यै नमः। (त्रिवारं पठेत) इसको तीन बार कहे। (रक्षादीपं प्रज्वाल्य) घी का दीवा बाले। (दक्षिण उत्तरे मुख कारयेत) दक्षिण या उत्तर को मुंह करदे। (कुशै त्रयै जलेनः श्राद्ध वस्तुनि सिंचयेत) तीन कुशा के मोटक से श्राद्ध की सब चीजों को गंगा जल का छींटा दे। मन्त्र—ॐ अपवित्रःपवित्रोवा सर्वावस्थां गतोपि वा। यःस्मरेत पुण्डरीकाक्ष स वाह्याभ्यन्तरः शुचिः॥ (गोर सर्षपान विकीर्य्यः) पीली सरसों श्राद्ध की सब जगह बखेरे, पाधा थोड़ी सी सरसों बायें हाथ में रक्खे और सीधे हाथ से इस मन्त्र के प्रमाण से छोड़े। मन्त्र—नमो नमस्ते गोविन्द पुराणपुरुषोत्तमः। इदं श्राद्ध हृषीकेश रक्षतु सर्वतोदिश॥ ॐ प्राच्यै नमः पूर्व में। ॐ आच्यै नमः दक्षिण में। ॐ प्रतिच्यै नमः पश्चिम में। ॐ उदैच्यै नमः उत्तर में। (विष्णु ध्यानम्) हाथ जोड़कर विष्णु भगवान का ध्यान करे। मन्त्र— ॐ शान्ताकारं भुजगशयनं पद्म नाभं सुरेशं। विश्वाधारं गगन सदृशं मेघवर्णं शुभाङ्गम्। लक्ष्मीकान्तं कमलनयनं योगिभिर्ध्यानगम्यम्। वन्दे विष्णुं भवभयहरं

सर्वलोकैकनाथम् ॥ (ततः कुशत्रय तिल जलै प्रतिज्ञा संकल्पं कुर्य्यात) कुशा तिल जल लेकर पार्वण श्राद्ध करने का संकल्प करे। संकल्प—ॐ तत्सद् विष्णुर्विष्णु र्विष्णु अद्यो नमः परमात्मने श्रीस्वेत वाराह कल्पे वैवस्वत मन्वनतरे अष्टाविंशति तमे युगे कलियुगे प्रथम चरणे जम्बू द्वीपे भरत खण्डे अर्य्यावर्त्तान्तर्गत ब्रह्मावर्तैक देशे पुन्य क्षेत्रे वेदोक्त फल प्राप्ति काम सिद्ध्यर्थं ऽमुक नाम सम्वत्सरे मासानां मासोत्तमे मासे ऽमुक मासे ऽमुक पक्षे ऽमुक तिथौ ऽमुक वासरे ऽमुकायने भास्करे ऽमुक गोत्रोहं ऽमुक शर्माहं पितृ पितामह प्रपितामहाना-ममुकाऽमुक शर्म्मणां वसु रुद्रा ऽऽदित्य स्व-रूपानां तथा च ऽमुकगोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां ऽमुकाऽमुक शर्म्मणां वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपानां सपत्नी-कानांपत्नक पार्वण श्राद्ध महं करिष्ये ॥१॥

(ततो गायत्री त्रिजपित्वा) तीन बार गायत्री जपे। मन्त्र—

ॐ देवताभ्यः पितृभ्यश्च महायोगिभ्य एव च। नमः स्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमो नमः ॥१॥ ये पितृ गायत्री है। (पुनः प्रार्थना) फिर हाथ जोड़े। मन्त्र— शान्ताकारं भुजगशयनम्० ॥

विश्वे देवा के आसन के लिये पूर्व में दो पत्ते धरे और दो पत्ते उनके नीचे धरे। ऊपर के पत्तों का मुंह पूर्व को और नीचे के पत्तों का मुंह उत्तर को करे, एक पितृ पक्ष का और एक मातृ पक्ष का। फिर इसी प्रकार पितृ आसन के लिये छः पत्ते दक्षिण में रक्खे और छः पत्ते उनके नीचे रक्खे, ऊपर के पत्तों का मुंह दक्षिण को और नीचे के पत्तों का मुंह पूर्व को करे। (प्रथम कुशबट यवजलै देवासनं संकल्पं कुर्य्यात्) पहले पिता पक्ष को विश्वे देवा के कुशबट आसन का जौ, जल लेकर संकल्प करे। ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपिता महानाममुकाऽमुक शर्म्मणां वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपानां सपत्नीकानां पार्वण श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः ॥१॥

इस आसन को पूर्व में ऊपर के पत्ते पर रखदे। (पुनः कुशबट यव जलै द्वितीय विश्वेदेवा आसनं संकल्पं करोति) फिर दूसरा नाना पक्ष के विश्वे देवा के कुशबट का जौ जल लेकर संकल्प करे। ॐ अद्यामुक गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमाता महानाममुकाऽमुक

शर्म्मणां वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपानां सपत्नीकानां पार्वण श्राद्ध सम्बन्धिनो विश्वेदेवा इदमासनं वो नमः ॥२॥ इस आसन को दूसरे विश्वे देवा के ऊपर के पत्ते पर रखदे। नाना पक्ष के संकल्प में हर एक जगह इतना बदल करना चाहिये कि मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहाना ।।बस।। और सारा उसी प्रकार संकल्प करना चाहिये। **(ततोऽपसव्यं पातित वामजानु दक्षिणाऽभिमुखः)** फिर अपसव्य अर्थात् अगोछा, जनेऊ सीधे कन्धे पर कर दक्षिण को मुंह करके बायां गोडा निवाले। **(पुनः कुशत्रय तिल जलान्यादाय)** फिर कुशा तिल हाथ में ले। **(पितृ त्रिसनानी पित्रादिभ्यः संकल्प कुर्य्यात्)** तीन कुशबट जो हैं उनमें पहले एक आसन का संकल्प करे। संकल्प—**ॐ अद्यामुक गोत्र पितरऽमुक शर्म्मण वसु स्वरूप सपत्नीक पार्वण श्राद्धे इदमासनंते स्वधा ॥१॥** इस आसन को दक्षिण में ऊपर के पहिले पत्ते पै धरदे। **(पश्चिमतः क्रमेण उत्सृजेत्)** पश्चिम दिशा की तरफ से धरने शुरू करे इसी प्रकार दो संकल्प और करे। दूसरे में ऐसा कहे—पितामह ऽमुक शर्म्मण। तीसरे में ऐसा कहे—प्रपितामह ऽमुक शर्म्मण। **(नाना पक्ष पितृ त्रिसनानी संकल्पं कुर्य्यात्)** इसी प्रकार फिर नाना की तरफ के पितरों का कुशबट लेकर संकल्प करे। संकल्प—

ॐ अद्यामुकगोत्र मातामह ऽमुक शर्म्मणः

पार्वण श्राद्धे इदमासनंते स्वधा ॥१॥ इस आसन को ऊपर के पत्ते पर रखदे इसी तरह दो संकल्प कुशबट लेकर और करे। दूसरे में प्रमातामह ऽमुक शर्म्मण ऐसा कहे। तीसरे में वृद्ध प्रमातामह ऽमुक शर्म्मण ऐसा कहे। ये छः आसन हो चुके। (सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखं। सव्य होकर पूर्व को मुंह करले। (विश्वेदेवा प्राञ्जली कृत्वा मन्त्र पठेत्) विश्वे देवा के आगे दोनों हाथ पसार कर ये मन्त्र पढ़े। मन्त्र— ॐ विश्वे-देवान अहमावाहीस्ये ॥ यजमान ऐसा कहे कि मैं विश्वे देवा का आह्वान करता हूँ। मन्त्र— ॐ विश्वेदेवा स आगता शृणुतामऽइमꣳ हवम्। इदम् बर्हिन्तिषीदतः देवान आवाह्य। (पुनः यवान् गृहीत्वा) फिर यजमान जौ हाथ में लेकर इस मन्त्र से। मन्त्र— ॐ यवोऽसि यवयाऽस्मद्द्वेषो यवयाऽरातिꣳ॥ (यवान् विकीर्य्यः) दोनों विश्वेदेवाओं के ऊपर जौ छोड़ दे। मन्त्र— आगच्छन्तु महाभागा विश्वेदेवा महा बलाः। ये यत्र योजिताः श्राद्धे सावधाना भवन्तु ते ॥ (ततो ऽपसव्यं दक्षिणाऽभि मुखः) अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करे। मन्त्र— ॐ पितृन हमावाहयिष्ये। ऐसे कहकर दोनों हाथ पसारे और ऐसा कहे कि मैं पितरों का आह्वान करता हूँ। मन्त्र— ॐ उशन्त-

स्त्वा निधीमह्यु शन्तः समिधीमहि । उश-
न्नुशत आवहु पितॄन् हविषे अत्तवे ॥ (पुनः
तिलं दद्यात्) फिर तिल हाथ में ले । मन्त्र—ॐ अपहता
असुरा रक्षाᳬसि वेदिषदः ॥ (तिलान् विकीर्य्यः)
पितरों के ऊपर तिल छोड़े । मन्त्र— ॐ आयन्तु नः
पितरः सोम्यासोऽग्निष्वात्ताः पथिभिर्देवयानैः ।
अस्मिन्यज्ञे स्वधया मदन्तोऽधिब्रुवन्तु ते
ऽवन्त्वस्मान् ॥ (ततः सव्यं पूर्वाभि मुखं) सव्य होकर
पूर्व को मुंह करले । (देवार्घ पात्र द्वयं पवित्रे धृत्वा) दोनों
विश्वेदेवाओं के धोरे दो दौने धरे उनमें कुशा के दो पवित्रे गेरे ।
मन्त्र— ॐ पवित्रेस्थो वैष्णव्यो० ॥ फूल, चन्दन
चूरा आदि सब सामग्री गेरे । मन्त्र—ॐ गंध द्वारा दुरा-
धर्षारिष्ट पुष्टां करीषणी० ॥ जल भरे । मन्त्र—
ॐ शन्नो देवीरभिष्टय आपो भवन्तु पीतये ।
शंय्योरभिस्रवन्तु नः ॥ (ततः ऽपसव्येन पितृ
षट अर्घपात्रेषु) अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करके पित्रों के
आगे छः दौने धरे । (इति मंत्रेण षट कुश पवित्रे धृत्वा)
उन दौनों में छः कुशा के पवित्रे गेरे । मन्त्र—ॐ पवित्रेस्थो
वैष्णव्यो० ॥ (षटऽर्घे तिलान् क्षिप्यः) छःओं दौनों

में तिल गेरे। मन्त्र— ॐ तिलोसि सोमदैवत्यो गोसवो देवनिर्मितः। प्रयत्नमाद्भिः प्रत्तः स्वधया पितृन्लोकान्प्रीणाहि नः स्वाहा॥ फिर सब दौनों में चन्दन, फूल आदि सब सामग्री गेरे। मन्त्र— ॐ गन्धद्वारा दुराधर्षा०॥ सब दौनों में जल भरे। मन्त्र— शन्नो देवीरभिष्टये०॥ (सव्यं पूर्वाभिमुखं) सव्य होकर पूर्व को मुंह करे। (एकं देवार्घ पात्र वाम हस्ते धृत्वा) एक दौना विश्वे देवा का उठाकर बायें हाथ पर धरे। (पवित्रा भोजन पात्रे धृत्वा) पवित्रा काढ़ कर भोजन के पत्ते पर धरे। (चिंचित् दुद्दकांतरंदत्वा) उस पवित्रे पर लोटे में से कुशा से छींटा दे। (दक्षिण पाणिनासं पुटितं कृत्वा) उस दौने को सीधे हाथों को चित्त करके ढके। मन्त्र— ॐ या दिव्या आपः पयसा सम्बभूवुर्या अन्तरिक्षा उतपार्थिवीर्याः। हिरण्यवर्णा यज्ञियास्ता न आपः शिवाः शꣳ स्योना सुहवा भवन्तु॥ (पुनः दक्षिणे हस्ते यव कुश जलान्यादाय। संकल्पं कुर्य्यात्) फिर उस दौने को सीधे हाथ में ले, जौ, कुशा, जल हथेली पर लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुकगोत्राणां पितृ पिता-

मह प्रपितामहानाममुकामुकशर्मणां पार्वण श्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एषते हस्तार्घो नमः ॥१॥ उस दौने में से जरासा जल विश्वे देवा के पत्ते पर वो जो पवित्रा काढ़कर नीचे के पत्ते पर रक्खा है उसके ऊपर अंगुलियों के ऊपर को जल छोड़दे। उस दौने को उसके धोरे ही सीधी तरफ सीधा ही रखदे। **(अर्घे पुनः पित्यर्घमस्तु)** वो जो कुशबट निकालकर नीचे के पत्ते पर धरा था उसको उठाकर इस दौने में डाल दे। **(एवं प्रकारेण द्वितीये मातामहादि विश्वे देवाभ्यो संकल्पं कुर्य्यात्)** इसी प्रकार नाना पक्ष के दूसरे विश्वेदेवाओं को बदलकर संकल्प करे। **(ततो ऽपसव्यं दक्षिणाभि मुखं)** अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करे। **(एवं पित्रादि पात्र वाम हस्ते धृत्वा)** इसी तरह पितरों का एक दौना उठाकर बायें हाथ पर धरले। **(पवित्रा भोजन पात्रे धृत्वा)** उस दौने में पवित्रा सीधे हाथ में निकालकर पितरों के भोजन के (अर्थात्) नीचे के पत्ते पर धरदे। **(तदुपरिदुदकान्तरं दत्वा)** उसके ऊपर जल में भिगोकर छींटा दे। **(दक्षिण हस्ते पाणिना संपुटितं कृत्वा)** उस दौने को सीधे हाथ से पट्ट करके ढके। मन्त्र— **ॐ या दिव्या आप पयसा० ॥** **(ऊर्घ सव्य हस्ते धृत्वा)** उस दौने को सीधे हाथ में ले। **(मोटक तिल जलान्यादाय संकल्पः)** मोटक, तिल, जल हाथ में लेकर संकल्प करे। संकल्प— **ॐ अद्यामुक गोत्र**

पितुरमुक शर्मन् वसुस्वरूप सपत्नीकं पार्वण श्राद्धे एषते हस्तार्घः स्वधा ॥१॥ उसमें से जरा-सा जल अंगूठे के नीचे को, कुशबट का पवित्रा जो निकालकर नीचे के पत्ते पर रक्खा है उसके ऊपर छोड़े और दौना उसके धोरे धर दे। **(पवित्रा क्षिप्यः)** नीचे के पत्ते पर से कुशबट उठाकर उस दौने में ही गेरदे। **(एवं प्रकारेण पांच संकल्पं कुर्य्यात्)** इसी तरह पांच संकल्प और करे। दूसरे में पितामह ऐसा कहे। तीसरे में प्रपितामह ऐसा कहे। चौथे में मातामह ऐसा कहे। पांचवें में प्रमातामह ऐसा कहे। छटे में वृद्ध प्रमातामह ऐसा कहे। **(सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखं)** सव्य होकर पूर्व को मुंह करे। **(देवार्घ पात्रे द्वयं दक्षिण हस्ते धृत्वा)** विश्वे देवा के दोनों दौने सीधे हाथ में उठावे। मन्त्र—**ॐ विश्वेभ्यो देवेभ्यः स्थानमसीती पठित्वा ऊत्तानमेव धार्येत ॥** इस मन्त्र को पढ़कर विश्वेदेवाओं की दाहिनी तरफ उन दौनों को सीधा ही धरदे। **(ततो ऽपसव्यं दक्षिणाभि मुखं)** अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करके। **(पित्रादि अर्घ पात्राणी उत्तरोत्तर क्रमेण मेलयित्वा। पितृ वाम पार्श्वे न्युब्जी कुर्य्यात्)** पहले तीन जो दौने पिता पक्ष के हैं उनको मिलावे इस रीति से—सीधे हाथ की तरफ से पड़बाबा का जल बाबा के पात्र में करदे और उस पात्र को उसके नीचे रखदे इसी प्रकार तीनों को करे। मन्त्र— **ॐ ये समानाः समनसो**

जीवा जीवे सुमामकोः तेषाꣳ श्रीमयि कल्पतामस्मिन् लोके सतꣳ समा ॥१॥ ॐ पितृभ्यः ऽस्थानमसीति पठित्वा ॥

दूसरा दौना पहले दौने के ऊपर रखदे। दोनों का जल तीसरे दौने में सारा करदे। तीसरा दौना उठाकर दूसरे दौने के ऊपर रखदे। फिर तीनों दोनों को उठाकर पत्तों से ऊपर बाईं तरफ उल्टे करदे। ये तीन अर्घ समाप्त हुये। (एव प्रकारेण मातामहादि अर्घ पात्राणी मेलयित्वा वाम पार्श्वे न्युब्जी कुर्य्यात) इसी प्रकार मातामह के दौनों का जल मिलाकर ऊपर नीचे रख कर पत्तों से ऊपर की तरफ बाईं ओर उल्टे करदे। मन्त्र—

माता महादीभ्यः स्थानमसि ॥ (तत स्था यातानि ना चालयेत् दक्षिणा दान पर्य्यन्तम्) जब तक पितरों को न उठावे तब तक पितरों की दक्षिणा ना दे ले। (सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखं) सव्य होकर पूर्व को मुंह करे। (द्वितीयं देवादिभ्यो गंधादि दत्वा) दोनों विश्वेदेवाओं पर दो पान पर सब सामग्री रखकर चढ़ावे, दो बत्ती घी की बाले। (यव कुश जलै संकल्पम् कुर्य्यात) जौ, कुशा, जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानामुकामुम शर्म्माणां वसु रुद्रऽऽदित्य स्वरूपाणां सपत्नीकानां पार्वण श्राद्धे सम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतानि

गन्ध, पुष्प. धूप, दीप, ताम्बूल, यज्ञोपवीत, वासांसिवो नमः ॥ (एवं प्रकारेण मातामहादि देवेभ्यो यव कुश जलै संकल्पम् कुर्य्याम्) इसी तरह से मातामह के विश्वेदेवाओं का जल, जौ, कुशा लेकर संकल्प करे। (चतुष्कोण मण्डलत कुर्य्यात्) विश्वे देवा के चारों तरफ जल फेरदे। मन्त्र—ॐ यथा चक्रा यथो विष्णु त्रै. लोक्यं यति रक्षतु। एतत मण्डल तोयान्तु सर्व देवाणि रक्षतु॥१॥ (अपसव्यं दक्षिणाभि मुखं) अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करे। (षट पित्रादिभ्य गंधादि दत्वा) छःओं पितरों के ऊपर पान पर सब सामग्री रखकर चढ़ावे। (मोटक तिल जलान्यादाय) कुशा का मोटक तिल, जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्र पितृ ऽमुक शर्म्मण वसु स्वरूप सपत्नीक पार्वण श्राद्धे एतानि गन्ध, पुष्प, धूप, दीप, पूगी फल, यज्ञोपवीत, वासांसि ते स्वधा ॥१॥ (एवं प्रकारेण पंच संकल्पम् कुर्य्यात्) इसी तरह पांच संकल्प बदलकर और करे। दूसरे में पितामह शर्मण ऐसा कहे। तीसरे में प्रपितामह शर्मण ऐसा कहे। चौथे में मातामह। पांचवें में प्रमातामह। छटे में वृद्ध प्रमातामह ऐसा कहे। (ततः जलेन भोजन पात्र सहितमासनं वेष्टयित्वा मंडलानी कुर्यात्)

फिर जल लेकर भोजन के पत्ते सहित आसन को मिनसदे अर्थात् उसके चारों तरफ जल फेरदे। मन्त्र— **यथा चक्रा यथा विष्णु त्रैलोक्यम् यति रक्षतु एतत मण्डल तोयान्तु सर्व पित्राणी रक्षतु ॥१॥** (सव्यं कृत्वा पूर्वाभि मुखं) सव्य होकर पूर्व को मुंह करे। (पुनः अर्घ देवा निकटे जलेन आहुति द्वयं दद्यात्) फिर एक दौना जल का भरके विश्वे देवा के धोरे धरे उसमें दो अन्न के स्वाहे छोड़े। मन्त्र— **ॐ अग्नये कव्यवाहनाय स्वाहा ॥१॥ ॐ सोमाय पितृमते स्वाहा ॥२॥** (पुनः अपसव्यं दक्षिणाभि मुखं) फिर अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करे और इस मन्त्र से अन्न का एक स्वाहा जमीन में छोड़े। मन्त्र— **ॐ इमन्नमेतद् भूस्वामि पितृभ्यो नमः ॥** (एवं प्रकारेण नाना पक्ष देवा अर्घ निकटे जलेन आहुति दद्यात्) इसी तरह नाना के विश्वेदेवाओं के धोरे एक दौना जल का भरके धरे उसमें भी अन्न की आहुति छोड़े इन्हीं मन्त्रों के द्वारा। (सव्येन देवा पात्र द्वयं किंचित् अन्न प्रवेस्य) सव्य होकर दोनों विश्वेदेवाओं के पात्रों पर उस अन्न में से जो कि स्वाहों का हाथ में बचा है उसमें से कुछ अन्न रखदे। (अपसव्येन पितृ भोजन पात्रेषु अन्नं दद्यात् किंचित् अन्न पिण्डार्थं धार्येत्) अपसव्य होकर उस अन्न में से थोड़ा सा अन्न पितरों के पात्र पर रखदे और बाकी पिण्डों के अन्न में मिलादे। (सव्येन

देवा निकटे जल प्रवेस्य) सव्य होकर दोनों विश्वेदेवाओं के धोरे दो दौने जल के भरके रक्खे। (अपसव्येन पितृ निकटे षट अर्घं जलेन प्रवेस्य) अपसव्य होकर छःओं पितरों के आगे छः दौने जल के भरके रक्खे। (सव्येन देवान्न मधुना धार्येत्) सव्य होकर दोनों विश्वेदेवाओं के अन्न पर शहद लगावे। मन्त्र— ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः माध्वीर्नः सन्त्वोषधी। ॐ मधुनक्तमुतोषसो मधुमत्पार्थिवꣳ रजः। मधु द्यौरस्तु नः पिता। ॐ मधुमान्नो वनस्पतिर्म्मधुमाꣳ अस्तु सूयः। माध्वीर्गावो भवन्तु नः ॥१॥ (अपसव्येन पित्रादि षट पात्रे अन्न मधुना धार्येत्) अपसव्य होकर पित्रों के छःओं पात्रों के अन्न पर शहद लगावे। मन्त्र— ॐ मधुव्वाताऽऋतायते मधु क्षरन्ति सिन्धवः० ॥ (सव्येन उत्तान पाणीभ्यां देव पात्रे स्पृष्टा तत मन्त्र) सव्य होकर विश्वे देवा को दोनों हाथ सीधे करके ढके और ये मन्त्र पढ़े। मन्त्र—ॐ पृथिवी ते पात्रं द्यौरपिधानं ब्राह्मणस्य मुखे अमृते अमृतं जुहोमि स्वाहा ॥१॥ ॐ इदं विष्णुर्विचक्रमे त्रेधा निदधे पदम्। समूढमस्य पाꣳ सुरे स्वाहा ॥ (ततो दक्षिणांगुष्ठेन ऽस्पर्शयेत्) सीधे हाथ

का अंगूठा विश्वे देवा के अन्न जल के लगावे। मन्त्र— ॐ श्रीकृष्ण हव्यमिदं रक्षमदीयम्। ॐ इदमन्नम्। ॐ इमा आपः। ॐ इदमाज्यम्। ॐ इदं हविः। (यव हस्ते गृहीत्वा) जौ हाथ में ले। ॐ यवोसि यवयाऽस्मद्द्वेषो यवयोरातीरित्यादि। (यवान् प्रक्षिप्यः) वे जौ के दाने विश्वे देवा पर छोड़े। (यव कुश जलै हस्ते संकल्पम् कुर्य्यात्) जौ, कुशा, जल हाथ में लेकर संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानांऽमुकऽमुकशर्मणां वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपानां सपत्नीकानां पार्वणश्राद्धसम्बन्धिनो विश्वेदेवा एतद्वोऽन्नं सोपकरणं नमः ॥१॥ (एवमेव मातामहादि देवेभ्योऽपि दद्यात्) ऐसे ही दूसरे विश्वेदेवाओं का संकल्प करे। इस संकल्प में मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामहानां ऐसा कहे। (अपसव्यं कृत्वा दक्षिणाभि मुखं पातित वाम-जानुः पितृ पात्रं न्युब्जीभ्यां व्यस्त पाणिभ्यां सृष्ट्वा) अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह कर बायां घोंटा निवाले, पितरों के बौने पर उल्टे हाथ करके ढके। मन्त्र— ॐ पृथिवी ते पात्रं० ॥१॥ ॐ विष्णु विचक्रमे० ॥२॥ ॐ कृष्ण कव्य० ॥३॥ (पुनः दक्षिणांगुष्ठेन

ऽस्पर्शयेत्) फिर पितरों के अन्न-जल के सीधा अंगूठा लगाकर बतावे। (तिल हस्ते गृहीत्वा) तिल हाथ में ले। मन्त्र— ॐ अपहता असुरा रक्षा० ॥ (तिलान् प्रक्षिप्यः) तिल के दाने पितरों पर छोड़दे। (तिल मोटक जलान्यादाय) तिल मोटक हाथ में लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्या मुकगोत्र पितृ पितामह प्रपितामहानाममुक शर्म्मण वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपा सपत्नीका पार्वण श्राद्धे एतत्तेऽन्नं सोपकरणं सिद्धानं तस्मैस्ते स्वधा ॥ (एवं प्रकारेण नाना पक्ष संकल्पम् कुर्य्यात्) इसी तरह नाना की तरफ का संकल्प करे। इस संकल्प में मातामह, प्रमातामह, वृद्ध प्रमातामह ऐसा कहना चाहिये। (सव्यं पूर्वाभि मुखः कृत्वा त्रिवारं गायत्री जपेत्) सव्य होकर पूर्व को मुंह करके तीन बार गायत्री पढ़े। ॐ देवताभ्यश्च पितृभ्य० ॥ (पुनः विष्णुध्यानं) फिर हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करे। मन्त्र— अनादि निधनो देव शंख चक्र गदाधरः। अक्षय पुण्डरीकाक्षः पित्रमे क्षप्रदोभवः ॥१॥ (इत्याद्या च ऋचः पठित्वा भूमिंतिलैरविकीर्य्येत्) फिर पाद्या वेद की ऋचा पढ़कर जमीन में तिल छोड़ता जावे। मन्त्र— ॐ उदीरतामवर उत्परास उन्मध्यमाः

पितरः सोम्यासः। असुं य ईयुरवृका ऽऋत-
ज्ञास्ते नोवन्तु पितरोहवेषु॥ ॐ सहस्रशीर्षा
पुरुष सहस्राक्ष सहस्रपात। सभूमिꣳ सर्व्व-
त्तस्पृत्वात्यतिष्ट दृशांगुलम् ॥१॥ (इति पुरुष
सूक्तम् जपेत्) पुरुष सूक्त का पाठ करे। मन्त्र—ॐ प्रभुः
शीशानो वृषभीन भी मोघनाधनः निक्षो-
भणश्चर्षणीनां सक्रदन्नो निमिष एक वीरः
शतꣳ शेना अजयत्साकमिंद्र ॥१॥ पुराण-
तिहास पाठानि) या पुराणों का पाठ करे। (अप सव्यं)
अंगोछा, जनेऊ कन्धे पर करले। (उच्छिष्ट सन्निधानावस्तृत
कुश त्रयां भूमिप्रोक्ष्य) कुशा से पृथिवी में दक्षिण की तरफ
छींटा दे। (कुशा ईशान्यां दिशिक्षिपेत्) उस कुशा को
ईशान दिशा में रखदे। (पुनः सव्य हस्ते कुशा गृहीत्वा)
फिर एक कुशा हाथ में लेकर आगे लिखे मन्त्र को पढ़े। मन्त्र—
ॐ असंस्कृत प्रणीतानाम त्यागीनां कुल-
भागीनां उच्छिष्ट भागधेयानां ॥ (दर्भेषु वि-
कासनम्) इस कुशा का जहां छींटा लगाया है वहां रखदे।
(ततो विकर पिण्ड दद्यात्) विकर पिण्ड हाथ में लेकर ये
मन्त्र पढ़े। मन्त्र—ॐ अनग्निदग्धा ये जीवा ये

प्रदग्धाः कुले मम । भूमौ दत्तेन तृप्यन्तु तृप्ता यान्तु परां गतिम् ॥१॥ (इति कुशोपरि अन्न मुत्सृजेत्) उस पिण्ड को उस कुशा के ऊपर रखदे। (सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे इस मन्त्र से। मंत्र— ओ३म् गंगा विष्णु० ॥ (त्रिवारं पठेत्) तीन बार ऐसा कहे। (हस्तौ प्रक्षाल्य) हाथ धोवे। मन्त्र— ओ३म् अपवित्रः पवित्रो वा० ॥ (हरिंस्मृत्वा) हाथ जोड़कर भगवान का ध्यान करे। ओं शान्ता-कारं भुजग शयनम्० ॥ (गायत्री मधुवाता ऋचः इति मन्त्र जपेत्) गायत्री और मधुवाता इस ऋचा को पढ़े। (ततो अपसव्यं) फिर अपसव्य हो जाय। (मृणमै एकं वेदीकां कृत्वा) मिट्टी की एक लम्बी वेदी बनावे। (जलेना प्रोक्षः) वेदी पर जल छिड़के। मन्त्र— ओं अयोध्या मथुरा माया काशी कांची वन्तिका पुरी द्वारा वति ज्ञेया सप्तै ते मोक्ष दायका ॥१॥ (कुशेन त्रिरेखाकरणं) कुशा से वेदी पर तीन लकीर खींचे, उत्तर से दक्षिण की तरफ। मन्त्र— ओं अपहता असुरा रक्षा०० ॥ (कुशा ईशान्या दिशि क्षिपेत्) उस कुशा को ईशान दिशा में रखदे।

(जलदंगारं वेदिकां चतुर्थ भ्रामईत्वा) कुशा जलाकर वेदी के चारों तरफ फेरदे। मन्त्र— ॐ ये रूपाणि प्रतिमुञ्चमाना असुराः सन्तः स्वधया चरन्ति। परा पुरो निपुरो ये भरन्त्यग्निष्टांल्लोकांप्रणुदात्वस्मात् ॥ (तदंगारं दक्षिणतो निदद्यात्) जली हुई कुशा को दक्षिण दिशा में रख दे। (उपमूल स कृदाच्छिन्न दक्षिणांऽग्न कुश त्रयं रेखाया मास्तणुयत्) रेखाओं पर तीन कुशा जड़ समेत रखदे। (सव्यं कृत्वा त्रिवारं गायत्री जपेत्) सव्य होकर तीन बार गायत्री जपे। मन्त्र—ॐ देवताभ्यश्च पितृभ्य० ॥ (ऽपसव्यं कृत्वा) अपसव्य हो जाय। (द्वयं अर्घं पुटकेष जल तिल गन्ध पुष्पाणी घृत्वा) दो दौनों में जल, चन्दन, तिल, फूल गेरे। (एक पात्रं वामहस्ते कृत्वा पुनः दक्षिण हस्ते मादाय धृत्वा) एक दौने को उल्टे हाथ से उठाकर फिर सीधे हाथ पर धरले। मोटक तिल जलान्यादाय। मोटक जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामहाऽमुकाऽमुक शर्माणं वसु रुद्राऽऽदित्या स्वरूपा सपत्नीको पार्वण श्राद्धे पिंडस्थानेषु कुशोपरि ऽत्राऽवने निगध्वम् त्रेधा विवझ भस स्वधा ॥१॥ (आस्तृत

दर्भमूले अवनेजलं दद्यात्) उस दौने का जल कुशा की जड़ में और बीच में और ऊपर की तरफ चढ़ावे। (पुटकस्य जलं सर्वेन दद्यात्) थोड़ा-थोड़ा सा जल तीनों जगह चढ़ावे एक ही जगह नहीं चढ़ावे। (पुनः एवं प्रकारेण माता महेभ्यो दद्यात्) इसी प्रकार माता पक्ष का अर्घ करे। दूसरा दौना जल का चढ़ाकर दोनों दौने अपने अगाड़ी धरले। (एकं पिण्ड वाम हस्ते पुनः दक्षिण हस्ते मादायः) एक पिण्ड उल्टे हाथ से उठाकर सीधे हाथ पर धरले। (मोटक तिल जलान्यादाय) कुशा, तिल लेकर संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्र पितरमुकशर्मन् पावंण श्राद्धे एषते पिण्डः स्वधा ॥ (एवं प्रकारेण पंच पिण्ड पृथक्-पृथक् संकल्पं कुर्यात) इसी प्रकार पांच पिण्डों का संकल्प अलग नाम लेकर करावे। (इति मन्त्र पठित्वा) इस मन्त्र को पढ़े। मन्त्र— कुश मूले करं प्रोक्षः लेप भाग मुजस्तृप्यंतु ॥ सीधे हाथ में आटा लेकर पिण्ड की जड़ में बायें हाथ में कुशा लेकर सीधा हाथ पूंछदे। (सव्यं त्रिराचमेत्) सव्य होकर तीन बार आचमन करे। मन्त्र—गंगा विष्णु० (त्रिवारं पठेत्) तीन बार पढ़े। (हस्तौ प्रक्षाल्यः) हाथ धो डाले। मन्त्र—ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० ॥ (ततो हरिं स्मृत्वा) परमेश्वर का ध्यान करे। मन्त्र—ॐ शान्ता-

कारं भुजग शयनं० ॥ (ऽपसव्यं दक्षिणाभि मुखं कृत्वा) अपसव्य होकर दक्षिण को मुंह करले। (पुनः पितृ ध्यानं) फिर पितरों का ध्यान करे। मन्त्र— ॐ अत्र पितरो मादयध्वं यथाभागमावृषायध्वम् ॥ (वामा ऽवर्तेनोदं मुखीभूयः प्रीत मनाश्वा संनियम्यते नैव यथा परावर्तः भानः पितृन भास्कर मूर्तीन ध्यायनं) उत्तर दिशा से श्वास खींचकर पितरों का ध्यान और सूर्य नारायण का ध्यान करता हुआ दक्षिण दिशा को छोड़ दे। मन्त्र—ॐ अमी मदन्त पितरो यथाभागमावृषायध्वम् ॥ (अवने जलं संकल्पम्) एक दौना वो जो अगाड़ी धरा है उसमें जल भरके संकल्प करे। मन्त्र— ॐ अद्यामुक गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामहाऽमुकामुक शर्मन् वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपा सपत्नीका पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि प्रत्यवने निगधन्नि धाभज भस स्वधा ॥ (त्रि पिंडोपरि प्रत्यवने जलं दद्यात्) तीन पिण्डों पर जल चढ़ावे। (एवं प्रकारेण मातामह पिण्डोपरि प्रत्यवने जलं दद्यात्) इसी प्रकार मातामह तीनों पिण्डों पर जल चढ़ावे दूसरे दौने से। (ततो नीवी विस्रस्य) आंट की कुशा निकाल दे। (सव्यं आचम्य) सव्य होकर आचमन करे। मन्त्र— ॐ

गंगा विष्णु० ॥ (त्रिवारं पठेत्) तीन बार कहे। (हस्तौ प्रक्षाल्यः) हाथ धोवे। ॐ अपवित्रः पवित्रो वा० ॥ (अपसव्यं) अपसव्य हो जाय। (षट पिण्डेषु सूत्राणि धृत्वा) छःओं पिण्डों पर सूत्र चढ़ावे। मन्त्र— ॐ नमो वः पितरो रसाय नमो वः पितरः शोषाय नमो वः पितरो जीवाय नमो वः पितरः स्वधायै नमो वः पितरो घोराय नमो वः पितरो मन्यवे नमो वः पितरः पितरो नमो वो गृहान्नः पितरो दत्त सतो वः पितरो देष्मा एत देवः पितरो वासः ॥१॥ (मोटकादिभि संकल्पम् कुर्य्यात्) मोटक, तिल, जल लेकर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्रा पितृ पितामह प्रपितामहाऽमुक शर्मन् वसु रुद्राऽऽदित्या स्वरूपा सपत्नीका पार्वण श्राद्धे पिण्डोपरि एतत सन्न त्रिधाभस्त स्वधा ॥१॥ (एवं प्रकारेण) मातामह सूत्राणि संकल्पम् कुर्य्यात्) इसी प्रकार मातामह पिण्डों पर सूत चढ़ावे संकल्प के साथ। (षट पिण्डेषु गन्धादि दद्यात्) छःओं पिन्डों पर सब सामग्री चढ़ावे। (इति जलम्) जल चढ़ावे। मन्त्र— ॐ शिवा आप सन्तु इति

जलम्) (पुष्पं) फूल चढ़ावे। मन्त्र—ॐ सोमनस्य मस्तु इति पुष्पं ॥ (तन्दुलान् क्षिपेत्) चावल चढ़ावे। मन्त्र— अक्षितं चारिष्टमस्तु तन्दुलां ॥ (भोजन पात्रेषु अन्न क्षिपेत्) ये सब चीजें भोजन पात्रों पर छोड़ दे। (षट पिण्डेषु अन्न स जलं परिवेस्यः) छःओं पिण्डों के अगाड़ी अन्न, जल धरे। (पुनः संकल्पम् कृत्वा) फिर संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्यामुक गोत्रा पितृ मातामह प्रपितामहा वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपा स-पत्नीका ऽमुक शर्मणां पार्वण श्राद्ध दत्तो तदन् पानादिक् भक्षयमस्तु ॥१॥ (एवं प्रकारेण मातादिभ्य अन्न जलं परिवेस्य) इसी प्रकार मातामह पर अन्न, जल परोसकर संकल्प करे। (ततो सव्यं दक्षिणा दिशं यस्यन् समनाः पिण्डोपरि जलधारां दद्यात्) सव्य होकर दक्षिण दिशा को देखता हुआ पूर्व को हाथ का अग्र भाग करके छःओं पिण्डों के ऊपर जल की धार चढ़ावे और पूर्व को देखता जावे। (एवं मन्त्रेण) इस मन्त्र से—ॐ अघोरा पितरः सन्तुः ॥ (सव्यं पूर्वाभिमुखं प्रार्थना) सव्य होकर पूर्व को मुंह करके हाथ जोड़े। मन्त्र— ॐ गोत्रनो वर्द्धतां दातारो नोऽभिवर्द्धन्तां वेदाः संततिरेव च।

(श्राद्धा च तो माव्य गभद् बहुदेयं च नास्तु) मन्त्र—
अन्नं च नो बहु भवेदतिथींश्च लभेमहि ।
याचितारश्च नः सन्तु मा च याचिष्म
कञ्चन ॥१॥ (ततो ऽपसव्यं पिण्डोपरि सपवित्र
कुशां नास्तीर्य्य) (अपसव्य होकर पिण्डों के ऊपर पवित्रा सहित
अच्छी कुशा धरे (दुग्ध धार वा जलधारां दद्यात्) दूध-जल
मिलाकर पिण्डों पर चढ़ावे। (कुशोपरि जलधारां दक्षिणाग्रे)
कुशा के ऊपर जल छोड़ता जा और दक्षिण दिशा को देखता जावे।
ॐ ऊर्जं व्वहन्तीरमृतं घृतम्पयः कीलालम्
परिस्रुतम् । स्वधास्थ तर्पयत मे पितृन् ॥
(ततः स्वस्थान स्थितान् पिण्डान् नम्रीभूय) फिर पिंडों
के आगे धरती में माथा निवावे। (पुनः पिण्ड उत्थापयेत)
फिर पिण्डों को उठाकर थाली में रखले। पिण्डा धार कुशान्
उल्मुख च वह्नौ क्षिपेत) वेदी पर से कुशा उठाकर अग्नि में
डाल दे। (पुनः सव्येन देवार्घ पात्र द्वयं संचाल्य) सव्य
होकर विश्वे देवा के दोनों अर्घ और पात्र हिला दे। (अपसव्येन
पित्र्यर्घ पात्रा एयुत्ताकृत्य) अपसव्य होकर पितरों के दोनों
को सीधा करदे। (सव्येन देव दक्षिणा दद्यात्) सव्य होकर
विश्वे देवा की दक्षिणा का संकल्प करे। संकल्प—ॐ अद्या-
मुकगोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाम-

मुकामुकशर्मणां पार्वण श्राद्धसम्बन्धिनां विश्वेषां देवानां कृतैतत्पार्वणश्राद्धप्रयिष्ठार्थं हिरण्यमग्निदैवतं (चन्द्रदैवतं रततं वा) यथा नामगोत्राय ब्राह्मणाय दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥१॥ (एवं प्रकारेण मातामहादि देवाय दक्षिणां दद्यात्) इसी तरह माता पक्ष की विश्वे देवा की का दक्षिणा संकल्प करे। (अपसव्यं कृत्वा पित्रादिभ्यो दक्षिणा दद्यात् संकल्पं कुर्य्यात्) अपसव्य होकर पितरों की दक्षिणा का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहाऽमुकाऽमुक शर्म्मणां कृतैतत्पार्वणश्राद्ध प्रतिष्ठार्थं इदं रजतं चन्द्र दैवतं यथानामगोत्राभ्य ब्राह्मणेभ्य दक्षिणां दातुमहमुत्सृजे ॥१॥ (एवं मातामह पितृ दक्षिणां दद्यात् संकल्पम् कुर्यात्) इसी तरह माता पक्ष के पितरों की दक्षिणा का संकल्प करे। संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्राणां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानां कृतैतत्पार्वण श्राद्ध प्रतिष्ठार्थमिदं रजतं चन्द्र दैवतं यथा नामगोत्रेभ्य ब्राह्मणेभ्य दक्षिणां दातुमह-

मुत्सृजे ॥' (तत पितृ विसर्जनम्) पितरों का विसर्जन करे अर्थात् पत्तों का हिलादे। (पात्र वाजनं) लोटे में चुकटी मारके बजादे। मन्त्र—ॐ वाजे वाजेऽवत वाजिनो ना धनेषु विप्रा अमृता ऽऋतज्ञाः। अस्य मध्वः पिवत मादयध्वं तृप्ता यान्तु पथिभि-देवयानैः॥ (सव्येन देव विसर्जनम्) सव्य होकर दोनों विश्वेदेवाओं के अगाड़ी हाथ जोड़े और हिलादे। मन्त्र— ॐ विश्वेदेवाः प्रीयन्तामिति ॥ (देव प्रार्थनां कुर्य्यात्) दोनों विश्वेदेवाओं के अगाड़ी हाथ जोड़े। मन्त्र— ॐ देवताभ्यश्च पितृभ्य महायोगीभ्य एव च नमस्वाहायै स्वधायै नित्यमेव नमोनमः॥ (पुनः अपसव्येन रक्षा दीपं निर्वाप्य) फिर अपसव्य होकर एक दौहत्ताड़ जल की भरके दीवे के ऊपर छोड़दे जिससे दीवा बुझ जावे। (सव्यं हस्तौ पादौ प्रक्षाल्यः) सव्य होकर हाथ पांव धो डाले। मन्त्र— ॐ अपवित्रः पवित्रोवा० ॥ (त्रिवारं आचम्यः) तीन बार गंगा जल का आचमन करे। मन्त्र— ॐ गंगा विष्णु० ॥ (त्रिवारं पठेत्) इसको तीन बार कहे। (हस्तौ प्रक्षाल्यः) हाथ धो डाले। मन्त्र— ॐ अवित्रः पवित्रोवा० ॥ (प्रार्थना) हाथ जोड़े। ॐ प्रमादात्कुर्वतां कर्म प्रच्यवेताध्वरेषु

यत् । स्मरणादेव तद्विष्णोः सम्पूर्णं स्यादिति श्रुतिः ॥१॥ (पुनः हस्तौ जलेन अक्षितान् कर्म कर्तु सुवर्ण दक्षिणा संकल्पं कुर्य्यात्) फिर हाथ में जल, चावल, सोने की दक्षिणा लेकर संकल्प करके कर्म कराने वाले को दे दे । संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानाममुकाऽमुक शर्म्मणां वसु रुद्राऽऽदित्य स्वरूपानां सपत्नीकानां पार्वण श्राद्ध कर्म्म कृते दक्षिणा ऽमुक गोत्राय ऽमुकशर्म्मणे ब्राह्मणाय तुभ्यं महं संप्रददेत ॥ (कर्म कृते दान प्रतिष्ठा चन्द्र मई दक्षिणा संकल्पम् कुर्य्यात्) चांदी की दक्षिणा लेकर कर्म कर्ता की प्रतिष्ठा का संकल्प करे । संकल्प— ॐ अद्यामुक गोत्राणां पितृ पितामह प्रपितामहानां मातामह प्रमातामह वृद्ध प्रमातामहानाममुकाऽमुक शर्म्मणां पार्वण श्राद्ध कर्म्म कृते दान प्रतिष्ठा सिद्ध्यर्थं अमुक गोत्राय ऽमुक नामने ब्राह्मणाय दातुमुतसृजेत ॥ (कर्म्म पूर्णार्थं विष्णु स्मरेत्) अब कर्म्म समाप्त हो चुका हाथ जोड़कर विष्णु भगवान का ध्यान करे । (मन्त्र पठेत्) ॐ शान्ताकारं भुजग

शयनं० ॥ (द्वयं मन्त्र पठेत्) दूसरा ये मन्त्र पढ़े—
ॐ यद क्षरं पदं भृष्टं मात्राहीनं च यः पठेत। तत्सर्वक्षम्यतां देवः प्रशिदः परमेश्वरः॥
(पुनः अग्नौ घृतस्य पयचा हुतय दद्यात्) फिर आग में घी की पांच आहुति दे— ॐ ब्रह्मणे स्वाहा ॥१॥ ॐ ॐ प्रजापतये स्वाहा ॥२॥ ॐ गृहाभ्य स्वाहा ॥३॥ ॐ कस्यपाय स्वाहा ॥४॥ ॐ अनुमतये स्वाहा ॥५॥ (पुनः ब्राह्मण ब्रह्मभोजनम् दक्षिणा दद्यात्) फिर ब्राह्मण को भोजन कराके दक्षिणा दे। ब्राह्मण के यहां श्राद्ध करावे तो संकल्प में दक्षिणा में शर्म्माऽहं कहे, वैश्य के यहां गुप्तोऽहं कहे, क्षत्री के यहां वर्म्माऽहं कहे, शूद्र के यहां दासोऽहं कहे। पिता के संकल्प में वसु स्वरूप कहे, बाबा के में रुद्र स्वरूप कहे, दादा के में आदित्य स्वरूप कहना चाहिये। (पिण्ड आदि वस्तु जलेन आदयेत्) पिण्ड और जितनी श्राद्ध की वस्तु हैं उनको जल में सिला दे।

॥ इति पार्वण श्राद्ध ॥

सामग्री—जौ, तिल, चावल, सुपारी १६, लौंग १६, धूप)५, कपूर)५, नैवेद्य, बताशे, पान १६, जनेऊ १६, दही)५, दौने ४०, कुशा, गंगाजल, गंगारज, तुलसीदल, पीली सरसों, दूब कच्चा, रुई कच्ची, ५ फूल हार, कमल गट्टे १६, ढाक के पत्ते ५०, चूरमा पूरियों का पिण्डों के लिये, इलायची छोटी १६, चन्दन चूरा सफेद, अंगोछे १० या १४, केशर का चन्दन, दक्षिणा यथाशक्ति।

स्वर, शकुन, स्वप्न, रत्न व सामुद्रिक ज्योतिष

व्यापार चमत्कार (तेजी-मन्दी)	50/-	रत्न विज्ञान (संपूर्ण दो भाग)	75/-
रमल ज्योतिष शास्त्र	50/-	रत्न, रुद्राक्ष और भाग्य	151/-
सरल सुगम ज्योतिष 50/- शीघ्र बोध	25/-	स्वप्न विज्ञान	50/-
सरल ज्योतिष शास्त्र	25/-	शिव स्वरोदय	20/-
भाग्य की कसौटी	30/-	स्वप्न ज्योतिष शास्त्र	25/-
कुण्डली गणित विज्ञान	25/-	स्वप्न ज्योतिष फलादेश	20/-
रत्न अंगूठी आपका भाग्य	50/-	वृहद् स्वप्न ज्योतिष भास्कर	80/-
शकुन ज्योतिष शास्त्र	50/-	शकुन भाग्य ग्रहपीड़ा निवारण	20/-
जातकालंकार	25/-	चिन्ताहरण अभिनव प्रश्नोत्तरी	25/-
फलित ज्योतिष प्रकाश	25/-	ताश के पत्तों में जीवन	20/-
आयु निर्णय 50/- आपका भविष्य	50/-	संपूर्ण स्वर विज्ञान	80/-
भृगुसंहिता फलित प्रकाश (दर्पण)	120/-	ज्ञान चन्द्रोदय प्रश्नावली	10/-
वृहदवकहड़ा चक्रम्	25/-	चित्रगुप्त प्रश्नावली	15/-
एक घंटे में विवाह संस्कार	25/-	भृगु तात्कालिक प्रश्नावली	60/-
कुंडली फलादेश	25/-	पवनपुत्र प्रश्न भास्कर	20/-
व्यापार रत्न गाइड	50/-	असली फालनामा	30/-
व्यापार अर्घ मार्तण्ड	50/-	स्त्री-जन्मदिन का जीवन पर प्रभाव	50/-
स्वर ज्योतिष शास्त्र	50/-	राशियों का जीवन पर प्रभाव	50/-
खेट कौतुकम् 50/- मूहूर्तचिंतामणि	40/-	काल ज्ञान चक्र	50/-
वृहद् ज्योतिष सार	50/-	वृहद् हस्त रेखा विज्ञान	48/-
मूहूर्त ज्योतिष शास्त्र	50/-	हस्त सामुद्रिक शास्त्र	25/-
चमत्कार ज्योतिष (मूक प्रश्न)	15/-	हस्त सामुद्रिक ज्योतिष	30/-
ज्योतिष सर्व संग्रह	30/-	आपका हाथ	30/-
भारतीय ज्योतिष, अंक विद्या, हस्त रेखायें व लाटरी	45/-	जीवन रेखा	20/-
अंक ज्योतिर्विज्ञान	20/-	मस्तक रेखा	20/-
लाटरी गाइड (लाटरी प्रथम पुर०)	45/-	भाग्य रेखा	20/-
व्यापार की कुन्जी	50/-	हृदय रेखा	20/-
प्रश्न ज्योतिष शास्त्र	15/-	सूर्य रेखा	20/-
भृगु गुप्त प्रश्नोत्तरी	25/-	विवाह रेखा	20/-
भृगु मूक प्रश्न दीपिका	25/-	स्वास्थ्य रेखा	30/-
भृगु मूक प्रश्न शिरोमणि	25/-	प्रभाव रेखाएं	30/-
हनुमान ज्योतिष	20/-	हस्त चिन्ह विज्ञान	30/-
ग्रह पीड़ा निवारण स्तोत्र संग्रह	20/-	शरीर लक्षण विज्ञान	30/-
रत्न परिचय	30/-	स्त्री सामुद्रिक	30/-
स्वर सिद्धि और प्राणायाम	40/-	वृहद विशाल सामुद्रिक विज्ञान कम्पलीट 2 VOL.	290/-
जन्म दिन का जीवन पर प्रभाव	40/-	अंकों के झरोखे में आपका भाग्य	45/-
रत्न और रुद्राक्ष धारण	50/-	कीरो की बोलती हस्त रेखाएं	45/-
रत्न दीपिका	30/-	ज्योतिष विज्ञान	50/-

देहाती पुस्तक भण्डार, चावड़ी बाजार, चौक बड़शाहबुला, दिल्ली-110006